हुब्बे दुन्या और लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत और नेकियों की तरग़ीब पर मुश्तमिल रिवायात व हिकायात का मज्मूआ

अज़्ज़ुहदु व तस्रुल अमल

तरजमा ब नाम

दुन्या से बे रग़्बती और उम्मीदों की कमी

Dunya se Be Ragbati aur Ummidon ki kami (Hindi)

इस किताब में आप पढ़ेंगे

- सिह़्ह़त और फ़ुरसत का फ़रेब
- दिलों की कमज़ोरी का सबब
- त़ालिबे दुन्या का अन्जाम
- नफ़्से मोमिन दुन्या से मुत़्मइन क्यूं ?
- गिना अफ़्ज़ल है या फ़क़्र ?

पेशकश : मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बाए तराजिम कुतुब

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79- 25391168 E-mail: maktabahind@hotmail.com www.dawateislami.net
मक्त-बतुल मदीना

दुन्या की महब्बत और लम्बी उम्मीदों से बचने के लिये एक रहनुमा तालीफ़

अज़्ज़ुहदु व क़स्रुल अमल

तर्जमा बनाम

दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब)

: नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी
तर्जमा : अज़्ज़ुहदु व क़स्रुल अमल
मुअल्लिफ़ : अश्शैख़ अस्अ़द मुह़म्मद सईदुस्सागि़रिजी
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब)
सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक 1430 हि., अगस्त 2009 ई.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिद के सामने ख़ास बाज़ार
तीन दरवाज़ा अह़मद आबाद-1 गुजरात इन्डिया

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20 मुह़म्मद अ़ली बिल्डिग, मुह़म्मद अ़ली रोड,
फ़ोन : 022-23454429
देहली : मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद
फ़ोन : 011-23284560
कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा,
नज़्द गुर्बत पार्क,यूपी, फ़ोन : 09415982471
नागपुर : (**C / 0**) जामिअ़तुल मदीना,मुह़म्मद अ़ली सराय
रोड, कमाल शााहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा
फ़ोन : 0712 -2737290
अजमेर शरीफ : 19 / 216 फलाहे़ दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार,
स्टेशन रोड, दरगाह,

website : www.dawateislami.net

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब !" के 17 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "17 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ** o मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़बरानी, अल ह़दीस:5942, जि.6, स.185)

दो म–दनी फूल : (1) बग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) कुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) इस रिवायत "**عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ**" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (ह़िल्यतुल औलिया, ह़दीस10750, जि.7, स.335) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन

की ब-र-कतें लूटूंगा (13) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) ''याद दाश्त'' वाले सफ़हा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (14) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (15,16) इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (मूअत्ता इमाम मालिक, जि.2, स.407, अल ह़दीस:1731) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (17) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान ''**निय्यत का फल**'' और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पम्फ़लेट मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على إحسانه و بفضل رسوله صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''**दा'वते इस्लामी**'' नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस ''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ⁶ शो'बे हैं :

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत,

माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''दा'वते इस्लामी'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
1	पहले इसे पढ़ लीजिये	9
2	इब्तिदाइय्या	12
3	अ़र्ज़े मुअल्लिफ़	13
4	दुन्या की मज़म्मत पर आयाते कुरआनिय्या	14
5	दुन्या की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबारका	14
6	दुन्या आख़िरत की खेती है	16
7	सिह़्ह़त और फ़ुरसत का फ़रेब	17
8	कुरआने पाक में लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत	19
9	दुन्या के फ़ित्नों से बचो	20
10	चार बातें लिख दी जाती हैं	20
11	तुम पर दुन्या फैला दी जाएगी	21
12	दिलों की कमज़ोरी का सबब	22
13	दुन्या की मह़ब्बत झगड़ों का सबब है	23
14	ज़मीन की बरकात	25
15	दर्से ह़दीस	26

16	दुन्या से ब क़-दरे ज़रूरत हिस्सा लो	26
17	ऊपर वाला हाथ, नीचे वाले हाथ से बेहतर है	27
18	दो फ़िरिश्तों की सदाएं	28
19	ज़ोहदे ह़क़ीक़ी	29
20	तेरा ह़क़ीक़ी माल	29
21	त़ालिबे दुन्या का अन्जाम	30
22	नजात कैसे मुम्किन है ?	31
23	सब से ज़ियादा ख़सारा पाने वाले	32
24	क़र्ज़ की अदाएगी में जल्दी करो	32
25	इमामुज़्ज़ाहिदीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم	33
26	म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की भूक शरीफ़ का बयान	34
27	कभी कसरते माल का सुवाल नहीं किया	34
28	ह़क़ीक़ी तवदंरी, दिल की तवंगरी है	35
29	मालिके दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़क़्र इख़्तियारी था	36
30	हर ने'मत के बारे में सुवाल होगा	40
31	ज़ोहद में मक़ामे सह़ाबा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ	41
32	म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के घर वाले	41

33	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	43
34	ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	46
35	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम बिन उ़त्बा बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	48
36	ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	49
37	दुन्या के बारे में फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم	50
38	नफ़्से मो'मिन दुन्या से मुत्मइन क्यूं ?	53
39	तुम तो बादशाह हो	54
40	इब्ने आदम का वावेला	54
41	अ़मल हमेशा इन्सान के साथ रहता है	55
42	आख़िरत की तैयारी कर लो	55
43	जन्नत और दोज़ख़ तुम से क़रीब हैं	56
44	ह़दीसे पाक की तश्रीह़	59
45	फ़ुक़रा और उन की मजालिस को ह़क़ीर न जानो	61
46	फ़ुक़रा के फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबारका	61
47	अ़ग़्निया से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले	64
48	जन्नत में फ़ुक़रा ज़ियादा होंगे	64
49	बा'ज़ अल्फ़ाज़े ह़दीस के मआ़नी	65
50	दर्से ह़दीस	66
51	ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और मालो दौलत	66
52	दर्से ह़दीस	67
53	ग़िना अफ़्ज़ल है या फ़क़्र ?	68

54	आ'माले आख़िरत में सुस्ती न करो	68
55	रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم की इत़ाअ़त, सआ़दत की अ़लामत	69
56	फ़िक्रे आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم	71
57	दुन्या की मज़म्मत पर फ़रामीने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہ عَنْھُمْ	72
58	ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	72
59	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	73
60	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	74
61	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	74
62	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	75
63	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	75
64	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا	75
65	ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	76
66	ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और दुन्या की मज़म्मत	77
67	सब से बड़ा ज़ाहिद और सख़ी	77
68	सोना और मिट्टी का ठीकरा	78
69	ह़कीम लुक़्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नसीह़तें	78
70	इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वा'ज़ व नसीह़त	78
71	दुन्या की छ6 चीज़ें और उन की ह़क़ीक़त	79
72	दुन्या की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चन्द अश्आ़र	80
73	मआख़ज़ो मराजेअ़	81
74	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	82

पहले इसे पढ़ लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन्सान की ज़िन्दगी का अहम्म मक़्सद इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ के ज़रीए उस की रिज़ा हासिल करना है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

(पा.27, अज़्ज़ारियात:56)

और इस अ़ज़ीम मक़्सद को **कमा ह़क़्क़ुह़ू** पाने के लिये बन्दे को चाहिये कि इस दुन्या में ज़ोहद इख़्तियार करे, और ज़ोहद से मुराद येह है कि ''एक चीज़ से दूसरी चीज़ की त़रफ़ तवज्जोह फेर लेना जो पहली से बेहतर हो और इस में शर्त़ है कि जिस चीज़ से तवज्जोह हटाई जाए वोह भी किसी ए'तिबार से दिल को पसन्द हो।'' और आ़म त़ौर पर ''ज़ाहिद'' दुन्या तर्क करने वाले को कहते हैं फिर जो बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ में ज़ोहद इख़्तियार करे वोह ''ज़ाहिदे कामिल'' कहलाता है और जो जन्नत और उस की ने'मतों में रग़बत रखते हूए ज़ोहद इख़्तियार करे वोह भी ज़ाहिद है लेकिन ज़ाहिदे कामिल से कम द-रजे वाला है।

बहर ह़ाल अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा येही है कि इन्सान दुन्या की ज़िन्दगी पर आख़िरत की ज़िन्दगी को तरजीह़ दे कि वोही दाइमी व बाक़ी रहने वाली है। चुनान्चे, इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।

(पा.21, अल अ़न्कबूत:64)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर बन कर रहो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर, और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह, और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तैयारी कर ले।''(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الدنیا...الخ, अल ह़दीस:6416, स.539)

ज़ेरे नज़र रिसाला ''**अज़्ज़ुहदु व क़स्रुल अमल**'' (मत़्बूआ़ त़ौज़ीअ़ मक-त-बतुल ग़ज़ाली, दिमिश्क़) में क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में ज़ोहद और उम्मीदों की कमी की अहम्मिय्यत उजागर की गई है। आज हर शख़्स अपनी दुन्या संवारने के लिये भागदौड़ कर रहा है, आख़िरत की फ़िक्र दिलों से ख़त्म होती जा रही है, इन्सान ने अपना सब कुछ दुन्या को समझ रखा है और लम्बी लम्बी उम्मीदें बांध रखी हैं, ऐसे ह़ालात में ज़रूरी है कि लोगों के दिलों में ज़ोहद व तक़्वा की अहम्मिय्यत उजागर की जाए। लिहाज़ा इस्लामी भाइयों के दिलों में ज़ोहद की अहम्मिय्यत डालने के मुक़द्दस जज़्बे के पेशे नज़र क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बाए तराजिमे क़ुतुब इस रिसाले का तर्जमा बनाम ''**दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी**'' पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। शो'बए तराजिमे क़ुतुब के म-दनी इस्लामी भाइयों की काविशों से येह रिसाला आप के हाथों में है। इस तर्जमे में जो ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **रब्बे रह़ीम** और उस के **मह़बूबे करीम** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास**

अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी कोताह फ़हमी को दख़्ल है।

तर्जमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :

★.... सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी त़रह़ समझ सकें।

★.... अ़रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

★.... आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए क़ुरआन **कन्ज़ुल ईमान** से लिया गया है।

★.... अह़ादीस की तख़्रीज अस्ल मआख़ज़ से करने की कोशिश की गई है।

★.... कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी ब्रेकेट के दरमियान लिख दिये गए हैं।

★.... तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये बा'ज़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं।

★.... अ़लामाते तरक़ीम का ख़याल रखा गया है।

★.... बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद ह़वाशी भी दिये गए हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीस्वीं रात छब्बीस्वीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

इब्तिदाइया

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

(पा.22, फ़ातिर:5)

(2)

وَابْتَغِ فِيْمَاۤ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल।

(पा.20, अल क़सस:77)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या से बे रग़बती माल को ज़ाएअ कर देने और हलाल को हराम कर देने का नाम नहीं, बल्कि दुन्या से कनाराकशी तो येह है कि जो कुछ तेरे हाथ में है वोह इस से ज़ियादा क़ाबिले ए'तिमाद न हो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास है।'' (जामेउत्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب ماجاء فی الزھادۃ.....الخ अल हदीस:2340, स.1887)

रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जन्नत में कोड़ा (या'नी हन्टर/दुर्रा) रखने की जगह दुन्या और उस में मौजूद हर चीज़ से बेहतर है।'' (सहीहुल बुख़ारी, کتاب الجھاد، باب فضل رباط یوم فی سبیل اللہ अल हदीस:2892, स.233)

अर्ज़े मुअल्लिफ़

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَاَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَاَتَمُّ التَّسْلِيْمِ عَلٰى سَيِّدِنَامُحَمَّدٍوَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ،وَبَعْدُ

(तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये जो तमाम जहानों का पालने वाला है। और अफ़्ज़ल तरीन दुरूद और कामिल तरीन सलाम हो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल और तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर रह़मतों और भलाइयों का नुज़ूल हो)

ईमान के शो'बों में से एक शो'बा येह भी है जिस को **"اَلزُّهْدُوَقَصْرُالْاَمَل"** कहा जाता है।

मैं ने इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ येह बातें ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ीह़ अह़ादीस और सलफ़ सालिह़ीन के नसीह़त आमोज़ अक़्वाल से जम्अ़ की हैं, अल्लाह सुब्ह़ानुहू व तआ़ला से दुआ़गो हूं कि वोह मेरे इस काम को पायए तक्मील तक पहुंचाए और मुझे, पढ़ने वालों और इस की इशाअ़त में ह़िस्सा लेने वालों को इस की बरकात से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए और इस को ख़ालिस त़ौर पर अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी का ज़रीआ़ बनाए बेशक वोही दुआ़ओं को सुनने वाला और क़बूल फ़रमाने वाला है।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلم

ख़ादिमे इल्म :

अस्अ़दुस्साग़रिजी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

दुन्या की मज़म्मत पर आयाते क़ुरआनिया :

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते ।

(पा.21, अल अन्कबूत:64)

(2)

قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो ! कि दुन्या का बरतना थोड़ा है। और डरवालों के लिये आख़िरत अच्छी ।

(पा.5, अन्निसा:77)

(3)

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल ।

(पा.27, अल हदीद:20)

दुन्या की मज़म्मत पर अहादीसे मुबारका :

(1).... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत की है पस तू मुहाजिरीन और अन्सार को नेक बना दे ।''

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ आए हैं "तू मुहाजिरीन व अन्सार की बख़्शिश फ़रमा दे।" (सहीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب الصحۃ والفراغ....الخ अल हदीस:6412,13, स.539)

(2)..... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर बन कर रहो।" हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर, और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह, और ह़ालते सिह़्ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तैयारी कर ले।" (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الدنیا....الخ अल हदीस:6416, स.539)

(3)..... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआ़ला उस शख़्स का उ़ज़्र क़बूल नहीं फ़रमाएगा जिस की मौत को मुअख़्ख़र कर दिया ह़त्ता कि उसे साठ साल तक पहुंचा दिया।" (मत़लब येह कि वोह इस उ़म्र में भी गुनाहों से बाज़ न आया) (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب من بلغ ستین سنۃ.....الخ, अल हदीस:6419, स.539)

प्यारे इस्लामी भाई !

येह लम्बी उम्मीदें तुम्हें नेकी के काम करने से हरगिज़ ग़फ़्लत में न डालें,..... येह दुन्या जिस में हम ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, आख़िरत की खेती है,..... हम पर लाज़िम है कि अपनी उ़म्र भलाई के कामों में सर्फ़ करें क्यूंकि हर नए दिन, दुन्या हम से दूर होती जा रही है और आख़िरत हमारे क़रीब आ रही है,..... आज अ़मल का मौक़अ़ है और कोई ह़िसाब नहीं लेकिन कल सिर्फ़ ह़िसाब होगा और कुछ अ़मल न कर सकेंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा।

(पा.4, आले इमरान:185)

ऐ इन्सान ! नेकी के कामों में कोशिश कर और मौत से पहले पहले अपनी उ़म्र से फ़ाइदा उठा,..... दुन्या एक मह़दूद वक़्त है उस में जितने भलाई के काम तू करना चाहे कर सकता है,..... और एक वक़्त वोह है जो आने वाला है जिस में तुझे नहीं मा'लूम कि क़ादिरे मुत्लक़ عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाने वाला है ? जो लम्ह़ा गुज़र गया तेरे अच्छे या बुरे अ़मल को साथ ले गया अब वोह क़ियामत तक वापस नहीं आएगा। ऐ इन्सान ! अपनी फ़राग़त से मौक़अ़ उठा और सिह़्ह़त से फ़ाइदा ह़ासिल कर (या'नी ज़िन्दगी के ऐसे लम्ह़ात को ग़नीमत जान और कुछ नेक आ'माल कर ले)। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "दो ने'मतें ऐसी हैं जिन की वजह से अक्सर लोग धोके में हैं (एक) सिह़्ह़त और (दूसरी) फ़राग़त।" (सह़ीह़ुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب الصحۃ والفراغ.....الخ अल ह़दीस:6412, स.539)

दुन्या आख़िरत की खेती है :

इमाम इब्ने जौज़ी علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं कि इन्सान कभी तन्दुरुस्त होता है मगर कस्बे मुआ़श में मश्ग़ूलिय्यत की बिना पर फ़ारिग़ नहीं होता और कभी ख़ुशह़ाल होता है लेकिन तन्दुरुस्त नहीं रहता पस जब तन्दुरुस्त और फ़ारिग़ हो और त़ाअ़त के बजाए सुस्ती

ग़ालिब आ जाए तो ऐसा शख़्स ख़सारे में है। दुन्या आख़िरत की खेती है इस में ऐसी तिजारत मौजूद है जिस का नफ़्अ़ आख़िरत में मिलेगा।

वोह शख़्स क़ाबिले रश्क है जो अपनी सिह्ह़त और फ़राग़त को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी व इताअ़त में गुज़ारे तो जिस ने अपनी सिह्ह़त व फ़राग़त को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में ज़ाएअ़ कर दिया वोह धोके में रहा क्यूंकि फ़राग़त के बा'द मश्ग़ूलिय्यत और सिह्ह़त के बा'द बीमारी आ घेरती है। और अगर ऐसा न भी हो तो फिर बुढ़ापा ही काफ़ी है। जैसा कि किसी शाइर ने कहा है :

يَسُرُّ الْفَتَى طولُ السَّلَامَةِ وَالْبَقَا	فَكَيْفَ تَرَى طُوْلَ السَّلَامَةِ يَفْعَلُ
يَرُدُّ الْفَتَى بَعْدَ اعْتِدَالٍ وَصِحَّةٍ	يَنُوْءُ اِذَا رَامَ الْقِيَامَ وَيُحْمَلُ

तर्जमा : (1)..... लम्बी उ़म्र और त़वील सलामती (सिह्ह़त) नौ जवान को ख़ुश करती है, (ऐ इन्सान) तू कैसे समझता है कि त़वील सलामती ऐसा करती रहेगी ?

(2).... वोह तो नौ जवान को सिह्ह़त और मो'तदिल ज़िन्दगी के बा'द बुढ़ापे की त़रफ़ लौटा देगी कि जब खड़ा होना चाहेगा तो मशक़्क़त से उठेगा और (कभी) बोझ की मिस्ल उठाया जाएगा।

सिह्ह़त और फ़ुरसत का फ़रेब :

आह ! बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशात और दुन्यावी ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह़ देने की वजह से ने'मते सिह्ह़त और फ़ुरसत के फ़रेब में आ चुके हैं..... और अक्सर लोग बुराई का हुक्म देने वाले नफ़्स की पैरवी करते हैं,.... अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने और इ़बादात से जी चुराते हैं,..... और अगर वोह अ़क़्लमन्दी और होश से काम लेते तो

ज़रूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कामिल ईमान रखते,..... मुजाहदए नफ़्स करते,.... और दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पाने के लिये ईमान वालों से दोस्ती और दीन के दुश्मनों से मुख़ालफ़त करते।

ग़ौर कीजिये ! कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रमान के सामने दुन्या की क्या क़ीमत है.....? चुनान्चे, अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज्जहुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में कोड़ा (हन्टर, दुर्रा) रखने की जगह दुन्या और उस में मौजूद हर चीज़ से बेहतर है। (सहीहुल बुख़ारी, کتاب الجهاد، باب فضل رباط یوم فی سبیل الله अल ह़दीस:2892, स.233)

मेरे प्यारे इस्लामी भाई !

बग़ैर किसी नेक इरादे के महज़ माल की कसरत और लम्बी उ़म्र की हिर्स न कर..... क्यूंकि मुसल्सल गुनाहों में बसर की गई त़वील उ़म्र कोई फ़ाइदा नहीं देती जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त वाले कामों में ख़र्च किये बग़ैर माल की कसरत कोई नफ़्अ़ नहीं देती,..... हां ! लम्बी उ़म्र का त़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़ारना ज़रूर नफ़्अ़ देगा और भलाई के कामों में ख़र्च की जाए तो दौलत की कसरत भी नफ़्अ़ देती है,..... जब कि उ़म्र का लम्बा होना और माल की कसरत उस वक़्त मज़्मूम है जब इन दोनों को नेकी के कामों में सर्फ़ न किया जाए,..... इसी वजह से अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ुत़्बात में इन दोनों की मज़म्मत फ़रमाई है। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त बुन्याद है : ''बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों के मुआ़मले में हमेशा जवान रहता है (1) लम्बी उम्मीदें और (2) दुन्या की मह़ब्बत। (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب من بلغ ستین سنۃ....الخ अल ह़दीस:6420, स.539)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जूं जूं इब्ने आदम की उ़म्र बढ़ती है तो उस के साथ दो चीज़ें भी बढ़ती रहती हैं (1) माल की मह़ब्बत और (2) लम्बी उ़म्र की ख़्वाहिश।'' (अल मर्जड़स्साबिक़, अल ह़दीस:6321)

क़ुरआने पाक में लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इन्हें छोड़ो कि खाएं और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हो।

(पा.14, अल ह़जर:3)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि ''इ़ल्म सीखने से आता है और फ़िक़्ह़ ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझबूझ अ़त़ा फ़रमाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।''

(त़बरानी, کتاب الاعتصام जि.19, स.511, अल ह़दीस:7312)

दुन्या के फ़ित्नों से बचो !

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! दुन्या अपनी रौनक़ (या'नी चमक दमक) से तुझ पर ग़ालिब न आ जाए और तुझे फ़ित्ने में मुब्तला न कर दे,..... दुन्या से बच और आख़िरत की त़रफ़ पूरी तवज्जोह रख,..... क्यूंकि अल्लाह तआ़ला दुन्या में तेरे लिये (अ़मल का) ज़ामिन है लेकिन आख़िरत में तेरे अ़मल का ज़ामिन नहीं। चुनान्चे,

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَفِی السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक येह क़ुरआन ह़क़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो।

(पा.26, अज़्ज़ारियात:22,23)

(2)

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल।

(पा.20, अल क़सस:77)

चार बातें लिख दी जाती हैं :

ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "तुम में से हर एक चालीस दिन तक अपनी मां के पेट में नुत्फ़े की सूरत जम्अ़ रखा जाता है (फिर आगे इसी

ह़दीसे पाक में है) फिर फ़िरिश्ते को चार बातों का हुक्म दिया जाता है कि इस का रिज़्क़, मौत, अ़मल और ख़ुश बख़्त या बद बख़्त होना लिख दे।"

(सह़ीह़ुल बुख़ारी, किताबुल क़दर, अल ह़दीस:6594, स.552 मुल्तक़ितन)

हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों के इम्तिह़ान और उन्हें आज़्माने के लिये जहन्नम को शहवाते नफ़्सानी से ढांप दिया है,..... पस ख़ुशबख़्त व सआ़दतमन्द है वोह शख़्स जो दुन्या से क़रीब तो हो,..... उसे सिर्फ़ अपनी हाथ की मुठ्ठी में रखे लेकिन उसे अपने दिल में जगह न दे,..... और दुन्या को हाथ में रखने का मफ़्हूम येह है कि "उस में से ह़लाल को ले, ह़राम को छोड़ दे और शुबहात से बचता रहे और इस त़रह़ वोह दुन्या को अपने हाथ (या'नी क़ाबू) में रख सकेगा, ... और अगर ऐसा हो कि ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम ही समझे मगर शुबह से न बचे तो वोह दुन्या की त़रफ़ तवज्जोह देने की वजह से फ़ित्ने में ग़रक़ हो जाएगा।

दुन्या तुम पर फैला दी जाएगी :

इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِئ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ग़ज़्वए बद्र में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ शरीक थे। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अहले बह़रैन से जज़िया वुसूल करने के लिये रवाना फ़रमाया क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बह़रैन वालों से जज़िये के बदले सुल्ह़ फ़रमाई थी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को उन का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बह़रैन से (जज़िये का) माल ले कर वापस लौटे तो अन्सार ने आप की आमद की ख़बर सुनी तो सब ने सुब्ह़ की नमाज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अदा की, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हुए तो सारे सामने आ गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देख कर तबस्सुम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा ख़याल है कि आप लोगों ने अबू उ़बैदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की आमद की ख़बर सुन ली है कि वोह कुछ माल लाए हैं।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा ही है।'' हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़ुश ख़बरी सुना दो और उस की उम्मीद रखो कि जो तुम्हें ख़ुश कर देगा, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तुम पर फ़क़्र (ग़ुर्बत) का ख़ौफ़ नहीं लेकिन मुझे डर है कि तुम पर दुन्या फैला दी जाएगी जैसा कि तुम से पहली क़ौमों पर फैला दी गई थी पस तुम भी इस दुन्या की ख़ातिर पहले लोगों की त़रह़ बा हम मुक़ाबला करोगे, और येह तुम्हें ग़फ़्लत में डाल देगी जिस त़रह़ इस ने पिछली क़ौमों को ग़ाफ़िल कर दिया।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب ما یحذر من زھرۃ الدنیا....الخ अल ह़दीस:6425, स.540)

दिलों की कमज़ोरी का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अ़नक़रीब तुम्हारे ख़िलाफ़ हर जानिब से लोग इकठ्ठे हो जाएंगे जैसे खाने वाले खाने के बरतन पर जम्अ़ होते हैं।'' अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस दिन हमारी ता'दाद कम होगी ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं ! बल्कि तुम तो कूड़े कचरे हो जाओगे

जैसे सैलाब का कूड़ा होता है (मुराद इस से आख़िरी ज़माने के ख़राब और निकम्मे लोग हैं), दुन्या से महब्बत और मौत से नफ़रत की वजह से तुम्हारे दिल कमज़ोर पड़ जाएंगे और तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रो'ब जाता रहेगा।'' (अल मुस्नद लिल इमाम अहमद बिन हम्बल, अल हदीस:22460, स.327 तग़य्युरन)

दुन्या की महब्बत, झगड़ों का सबब है

हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक रोज़ (घर से) बाहर तशरीफ़ ले गए और शोहदाए उहुद पर नमाज़ पढ़ी[1] जैसी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मय्यित पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हैं।

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ पर तशरीफ़ ले गए और इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हारे लिये फ़रत[2] (या'नी पेशरू) हूं और तुम्हारा निगरान गवाह हूं[3] और ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त भी हौज़ (या'नी हौज़े कौसर) को देख रहा हूं और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की

---

1. येह नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आठ साल के बा'द अदा फ़रमाई थी जैसा कि मिश्कातुल मसाबीह, باب هجرة الصحابة من مكة ووفاته हदीस:5958 से वाज़ेह है, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस की वज़ाहत करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''आठ साल बा'द नमाज़े जनाज़ा पढ़ना हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़ुसूसिय्यत है। बा'ज़ रिवायात में इस की तस्रीह भी है कि येह नमाज़े जनाज़ा थी।'' (मिर्आतुल मनाजीह शरहे मिश्कातुल मसाबीह, जि.8, स.286)

2. हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ''लफ़्ज़े फ़रत'' की तश्रीह व तह्क़ीक़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : फ़रत ब मा'ना फ़ारित है जैसे दबअ ब मा'ना ताबेअ, फ़रत वोह शख़्स है जो किसी जमाअत से आगे मन्ज़िल पर पहुंच कर उन के त़आम, क़ियाम वग़ैरा तमाम ज़रूरियात का इन्तिज़ाम करे जिस से वोह जमाअत आ कर हर त़रह आराम पाए **(बक़िय्या ह़ाशिया अगले सफ़्हे पर देखें....)**

चाबियां अ़ता की गई हैं या (इर्शाद फ़रमाया) ज़मीन की चाबियां अ़ता की गई हैं । और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तुम पर इस बात का डर नहीं कि तुम मेरे बा'द शिर्क करोगे, बल्कि मुझे तुम पर इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम (हुसूले दुन्या के लिये) एक दूसरे से मुक़ाबला करोगे ।" (सहीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب ما یحذر من زهرة الدنیا، अल ह़दीस:6426, स.540)

(......बक़िय्या ह़ाशिया), मत़लब येह है कि मैं तुम से पहले जा रहा हूं ताकि तुम्हारी शफ़ाअ़त, तुम्हारी नजात, तुम्हारी हर त़रह़ कारसाज़ी (या'नी मदद) करूं तुम में से जो भी ईमान पर फ़ौत होगा वोह मेरे पास मेरी ह़िफ़ाज़त, मेरे इन्तिज़ाम में इस त़रह़ आवेगा जैसे मुसाफ़िर अपने घर आता है, भरे घर में । (अशिअ़अ़तुल्लम्आ़त) मो'मिन मरते ही हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) के पास पहुंचता है बल्कि बा'ज़ मो'मिनों की जांकनी के वक़्त ख़ुद हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) उन्हें लेने तशरीफ़ लाते हैं जैसा कि इमाम बुख़ारी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي) का वाक़िआ़ हुवा, और बहुत मरने वालों से (नज़ाअ़ के वक़्त) सुना गया हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आ गए, ख़याल रहे कि छोटे फ़ौतशुता बच्चों को भी "फ़रत़" फ़रमाया गया है मगर वोह "फ़रते़ नाक़िस" हैं। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) "फ़रते़ कामिल" या'नी हर त़रह़ के मुन्तज़िम नीज़ "اَيْدِيْكُمْ" में ख़ित़ाब सारी उम्मत में है न कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) अपनी उम्मत के दाइमी मुन्तज़िम हैं ।

(मिर्आतुल मनाजीह़ शरहे़ मिश्कातुल मसाबीह़, जि.8, स.286)

3. ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस की शरह़ में फ़रमाते हैं कि "इस की ताईद इस आयत से है " "وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا" ब मा'ना निगरान गवाह है न कि फ़क़त़ गवाह, वरना (लफ़्ज़े) **عَلٰی** न आता बल्कि (लफ़्ज़े) **لام** आता, (लफ़्ज़े) **عَلٰی** हो तो ख़िलाफ़ गवाही मुराद होती है, या'नी ऐ मुसल्मानों मैं तुम्हारे ईमान, आ'माल, क़ल्बी ह़ालात का अ़लीमो ख़बीर व ह़फ़ीज़ो निगरान हूं तुम सब के ईमान की नब्ज़ पर मेरा हाथ है मुझे हर शख़्स के ईमान और द-रजए ईमान की हर वक़्त ख़बर है।"

(मिर्आतुल मनाजीह शरहे़ मिश्कातुल मसाबीह़, जि.8, स.286,286)

ज़मीन की बरकात :

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रहमते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे तुम पर जिस चीज़ का ज़ियादा ख़ौफ़ है वोह अल्लाह तआ़ला का तुम्हारे लिये ज़मीन की बरकात को निकालना है।" अ़र्ज़ की गई : "ज़मीन की बरकात क्या हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या की आसाइशें।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "क्या ख़ैर के साथ शर भी आता है ?" तो सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुकूत फ़रमाया हत्ता कि हम ने गुमान किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल हो रही है, फिर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक पेशानी से पसीना पोंछते हुए इर्शाद फ़रमाया : "सुवाल पूछने वाला कहां है ?" उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मैं हाज़िर हूं।" हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हम ने उस के वहां मौजूद होने पर उस की ता'रीफ़ की।" हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ैर के साथ ख़ैर ही आती है, बेशक येह दुन्या का माल सर सब्ज़ और शीरीं लगता है जिस त़रह़ फ़स्ले रबीअ़ जो कुछ उगाती है वोह या तो जानवर को पेट फुला कर मार डालता है या मरने के क़रीब कर देता है। मगर वोह जानवर जो हरी हरी घास खाए, जब पेट भर जाए तो धूप में आ जाए, जुगाली करे और गोबर व पेशाब करे फिर आ कर दोबारा चरने लगे, यूं ही येह माल भी शीरीं है लेकिन जो ह़क़ के साथ उसे ह़ासिल करे और ठीक जगह पर ख़र्च करे तो (सवाब ह़ासिल करने में) बहुत अच्छा मददगार है और जो ना ह़क़ माल ले तो वोह उस की त़रह़ है जो खाता है मगर पेट नहीं भरता।"

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:6427)

दर्से ह़दीस :

यहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने साइल पर वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि ख़ैर अगर शरीअ़त की ह़ुदूद में इस्ते'माल हो तो ख़ैर ही लाती है, और अगर ख़ैर को उस के अहल तक पहुंचाने में बुख़्ल किया जाए या फ़ुज़ूल ख़र्ची में ज़ाएअ़ कर दिया जाए तो येही शर बन जाती है।''

नीज़ यहां पर हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह मिसाल बयान फ़रमाई है कि दुन्या अपने चाहने वालों से कैसा सुलूक करती है पस दुन्या और उस के अस्बाब के ह़ुसूल में मुन्हमिक इन्सान उस चौपाए जैसा है जो चारे से लज़्ज़त उठाते हुए उस के खाने में मुन्हमिक है और अपनी गुन्जाइश से बढ़ कर खा रहा है, और एक ही बार सारा निगल जाने की आ़दत तर्क नहीं करता ह़त्ता कि उस का पेट फूल जाता है और हलाकत (या'नी मौत) उस की त़रफ़ तेज़ी से बढ़ती है। और यूं ही वोह शख़्स जो ह़लाल व ह़राम (हर क़िस्म का) माल जम्अ़ करता रहता है हलाकत से नहीं बच सकता।

और जब इन्सान ग़फ़्लत से आगाह हो जाए तो हर वोह चीज़ जो उस के लिये नुक़्सानदेह और ह़राम है, उस के इज़ाले की कोशिश करे, पस यूं वोह मह़फ़ूज़ रहेगा जिस त़रह़ चौपाया जुगाली करता है तो वोह खाने के आसानी से निगलने और दूसरी मरतबा हाज़िमे में मदद देती है, और इस के सबब चौपाया तन्दुरुस्त रहता है।

दुन्या से ब क़-दरे ज़रूरत ह़िस्सा लो :

बहर ह़ाल सब से अच्छा, बेहतरीन और औला येह है कि इन्सान ह़स्बे ज़रूरत दुन्या से ह़िस्सा ले इसी बात को रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया : ''जो ह़क़ के साथ इस

(या'नी माल) को ह़ासिल करे और ठीक जगह पर ख़र्च करे तो (सवाब ह़ासिल करने में) बहुत अच्छा मददगार है।" और जिस ने ना ह़क़ त़रीक़े से माल कमाया तो वोह (या'नी माल) उस का मुआ़विन नहीं बल्कि उस के लिये अब्स और बेकार शै होगा। नीज़ इस ह़दीसे पाक में मिसाल बयान हुई है उस काफ़िर के लिये जो कुफ़्र को छोड़ने से ग़ाफ़िल है, और उस गुनाहगार के लिये जो तौबा से ग़ाफ़िल है, और उस शख़्स के लिये जो तौबा की त़रफ़ जल्दी करता है, और उस के लिये जो दुन्या को छोड़ कर आख़िरत में रग़बत रखता है।

और अ़क़्लमन्द तो वोह है जो शर-ई हुदूद के अन्दर रह कर जाइज़ ज़राएअ़ से दुन्या से फ़ाइदा ह़ासिल करता है और फिर जाइज़ जगह उस को ख़र्च करता है।

ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने रह़मते आ़लमियान, शहन्शाहे कौनो मकान, मालिके दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से माल का सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अ़त़ा फ़रमाया, मैं ने दोबारा सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर अ़त़ा फ़रमाया, मैं ने तीसरी बार सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मुजे अ़त़ा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : "बेशक येह माल सर सब्ज़ और मीठा है पस जिस ने इसे अच्छी निय्यत से लिया तो इसे उस में ब-र-कत दी जाएगी और जिस ने दिल के ह़िर्स व लालच से ह़ासिल किया उसे इस में ब-र-कत नहीं दी जाएगी और वोह ऐसा है कि खा कर भी सैर नहीं होता, और (आगाह रहो कि) ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से अफ़्ज़ल है।" (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم ھذا المال ...الخ अल ह़दीस:6441, स.541)

दो फ़िरिश्तों की सदाएं :

तमाम मुसल्मानों के लिये त़लबे दुन्या में मियाना रवी बेहतर है, क्यूंकि येह उन्हें किसी का मोह़ताज करती और न ही उस अहम्म काम से रोकती है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के सिपुर्द किया है और वोह अहम्म काम इस कलिमे या'नी لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰه को सर बुलन्द करना है। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरदारे मुक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जब भी सूरज तुलूअ़ होता है तो उस के दोनों जानिब दो फ़िरिश्ते भेजे जाते हैं जो सदा लगा रहे होते हैं, और इस सदा को जिन्नो इन्स के इलावा तमाम ज़मीन वाले सुनते हैं, वोह फ़िरिश्ते कहते हैं : "ऐ लोगो ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ जाओ, बेशक (दुन्या का माल) जो थोड़ा हो और किफ़ायत करे वोह बेहतर है उस (माल) से जो ज़ियादा हो और ग़फ़्लत में डाल दे।" (अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, अल ह़दीस:21780, जि.8, स.168)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَلَا یَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी। (पा.22, फ़ातिर:5)

ज़ोहदे ह़क़ीक़ी

दुन्या के कामों में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद तेरा आख़िरत के लिये फ़िक्र करना और इस का शुऊ़र रखना, तेरे दिल से दुन्या की मह़ब्बत को निकाल देगा। और इसी को ज़ोहदे ह़क़ीक़ी कहते हैं और येह हमेशा हमेशा के लिये तुझे अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर देगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "दुन्या से बे रग़बती माल को ज़ाएअ़ कर देने और ह़लाल को ह़राम कर देने का नाम नहीं, बल्कि दुन्या से कनारा कशी तो येह है कि जो कुछ तेरे हाथ में है वोह इस से ज़ियादा कामिले ए'तिमाद न हो जो कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास है।" (जामेउत्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب ماجاء فی الزھادۃ अल ह़दीस : 2340, स.1887)

तेरा ह़क़ीक़ी माल

दुन्या और उस के कामों में रहते हुए तेरा आख़िरत के बारे में सोचना तुझे तेरे ह़क़ीक़ी माल की पहचान करवा देगा पस तू इस माल को (राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दे कर) अपनी ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी के लिये मह़फ़ूज़ कर लेगा। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से किस को अपने माल से वारिस का माल ज़ियादा मह़बूब है ?" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर शख़्स को अपना माल

ज़ियादा प्यारा है ।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस का अपना माल तो वोह है जो उस ने आगे भेजा और वारिस का माल वोह है जो उस ने पीछे छोड़ा ।''

(सहीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب ما قدم من ماله فهو له अल ह़दीस:6442, स.531)

त़ालिबे दुन्या का अन्जाम

ऐ प्यारे इस्लामी भाई ! क़ुरआने करीम से ग़ाफ़िल मत हो और उस से रिश्ता न तोड़ क्यूंकि येह तुझे अच्छा समझाने वाला है,..... बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या को त़लब करने और उसे जम्अ़ करने के सबब आख़िरत से ए'राज़ करने वाले को ख़ित़ाब फ़रमाता है,..... और उस को भी जो ह़लाल, ह़राम और मश्कूक माल में तमीज़ नहीं करता,..... और समझता है कि ह़लाल वोह है जो इन्सान के हाथ लग गया और ह़राम वोह है जिस से वोह मह़रूम कर दिया गया । चुनान्चे,

अल्लाह तबारक व तआ़ला ऐसे शख़्स को मुख़ात़िब कर के इर्शाद फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और उस में कमी न देंगे येह हैं वोह जिन के लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद हुए जो उन के अ़मल थे ।

(पा.12, हूद:15,16)

ऐ माल जम्अ़ करने वाले ! तुझे जो चीज़ बचा सकती है वोह येह है कि तू माल को जाइज़ ज़राएअ़ से ह़ासिल करे,..... ह़क़दारों को उस से महरूम न करे,..... और उसे ह़राम कामों में ख़र्च न करे,..... अगर ऐसा नहीं करेगा तो हलाक हो जाएगा।

नजात कैसे मुम्किन है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं एक रात घर से निकला तो क्या देखता हूं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तन्हा तशरीफ़ ले जा रहे हैं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कोई भी आदमी नहीं था।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने गुमान किया शायद आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने साथ किसी दूसरे का चलना ना पसन्द फ़रमाएं। तो मैं चांदनी में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे चलता रहा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीछे मुड़ कर मुझे देख लिया और इर्शाद फ़रमाया : ''कौन है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा करे, मैं अबू ज़र हूं।''

इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! आ जाओ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं थोड़ी देर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चला तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़ियादा माल जम्अ़ करने वाले क़ियामत के दिन कम नेकियों वाले होंगे मगर जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और वोह उसे अपने दाएं, बाएं, आगे और पीछे (नेकी के कामों में) ख़र्च करे और इस के ज़रीए अच्छे (या'नी नेकी के) काम करे।''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب المکثرون ھم المقلون अल ह़दीस:6332, स.541)

सब से ज़ियादा ख़सारा पाने वाले :

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा जब कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का'बतुल्लाह शरीफ़ के साए में तशरीफ फ़रमा थे, जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो इर्शाद फ़रमाया : ''रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह सब से ज़ियादा ख़सारा पाने वाले हैं।'' हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं क़रीब आ कर बैठ गया जब कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार येही फ़रमाते जा रहे थे, यहां तक कि मैं खड़ा हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! वोह कौन लोग हैं ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह मालो दौलत की कसरत वाले होंगे मगर वोह जो दाएं, बाएं, आगे और पीछे ख़र्च करें और वोह बहुत थोड़े होंगे और जो भी ऊंट या गाय या बकरियों का मालिक हो और उन की ज़कात अदा न करे तो वोह (जानवर) क़ियामत के दिन पहले से ज़ियादा बड़े और मोटे हो कर आएंगे और अपने मालिक को सींगों से मारेंगे और खुरों से रौंद डालेंगे यहां तक कि तमाम लोगों का हिसाब व किताब ख़त्म हो जाएगा।''

(सहीह मुस्लिम, کتاب الزکاۃ، باب تغلیظ عقوبۃ अल हदीस:2300, स.834)

क़र्ज़ की अदाएगी में जल्दी करो :

ऐ साहिबे माल ! तुझे नजात देने वाली शै येह भी है कि तेरे ज़िम्मे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से किसी का भी क़र्ज़ बाक़ी न रहे,....

और (अगर क़र्ज़ हो तो) उस की अदाएगी में जल्दी कर,.... क्यूंकि क़र्ज़ रूह़ को (दुख़ूले जन्नत से) रोक देगा और उसे क़ैद कर देगा अगर्चे वोह शहीद की रूह़ ही क्यूं न हो। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे येह बात पसन्द नहीं कि मेरे पास उह़द पहाड़ के बराबर सोना हो और इसी ह़ालत में तीसरा दिन आ जाए और मेरे पास एक दीनार भी बचा रहे, सिवाए उस दीनार के जिसे मैं अपना क़र्ज़ अदा करने के लिये रोक लूं।''

(सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الزکاۃ، باب تغلیظ عقوبۃ.....الخ अल ह़दीस:2302, स.834)

इमामुज़्ज़ाहिदीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए और हमारे पास कोई ऐसी शै न थी जिसे कोई जानदार खा सके मगर थोड़े से जव जो मेरी खठलिया में थे, मैं एक मुद्दत तक उस से खाती रही फिर मैं ने उन को माप लिया तो वोह ख़त्म हो गए।''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب فضل الفقر अल ह़दीस:6451, स.542)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वान (या'नी छोटी मेज़ की मिस्ल ऊंचे दस्तरख़्वान) पर खाना नहीं

खाया और न ही कभी चपाती (या'नी पतली रोटी) खाई यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:6450)

कभी जव की मोटी रोटी तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना म-दनी मदीने वाले صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم की भूक शरीफ़ का बयान :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी लगातार दो दिन तक सैर हो कर ''जव'' की रोटी नहीं खाई, यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए।'' (जामेइ़त्तिरमिज़ी, باب ماجاء فی معیشۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم....الخ, अल ह़दीस:2357, स.1888)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुसल्सल कई रातें भूक की ह़ालत में गुज़ारते और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर वालों को शाम का खाना तक मुयस्सर न आता और उन के खाने में अक्सर जव की रोटी होती।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:2360)

कभी कसरते माल का सुवाल नहीं किया :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उयूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी और कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से माल की कसरत का सुवाल न किया और अगर सुवाल

किया तो ब क़-दरे किफ़ायत का सुवाल किया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की आल को इतना रिज़्क़ अ़ता फ़रमा जो ब क़-दरे ज़रूरत हो।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:2361)

ह़क़ीक़ी तवंगरी, दिल की तवंगरी है :

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी बयान फ़रमा दिया कि ह़क़ीक़ी तवंगरी येह नहीं कि लोगों के पास माल की कसरत हो बल्कि ह़क़ीक़ी तवंगरी तो दिल की तवंगरी का नाम है। (या'नी सुवाल करने को पसन्द न करे और जो मौजूद है उसी पर क़नाअ़त करे)। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''तवंगरी येह नहीं कि साज़ो सामान की कसरत हो बल्कि अस्ल तवंगरी तो दिल का तवंगर होना है।''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب الغنی غنی النفس अल ह़दीस:6556, स.541)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शाइ़र पर रह़म फ़रमाए जिस ने येह कहा :

غِنَی النَّفْسُ مَایُغْنِیْکَ عَنْ سَدِّ حَاجَةٍ فَاِنْ زَادَشَیْئًاعَادَذَاکَ الْغِنٰی فَقْرًا

तर्जमा : दिल की तवंगरी वोह है जो ज़रूरत को पूरा करने के लिये तुझे काफ़ी हो जाए, तो अगर वोह ज़रूरत से ज़ियादा करे तो वोही तवंगरी, फ़क़्र में बदल जाएगी।

एक दूसरे शाइ़र ने कहा :

وَمَنْ یُنْفِقُ السَّاعَاتِ فِیْ جَمْعِ مَالِهٖ مَخَافَةَ فَقْرٍ فَالَّذِیْ فُعِلَ الْفَقْرُ

तर्जमा : जो शख़्स फ़क़्र के डर से सारा वक़्त माल जम्अ़ करने में ख़र्च करता है पस वोही फ़क़्र में मुब्तला किया जाता है।

मालिके दो जहां صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़क़्र इख़्तियारी था :

याद रहे कि रह़मते आ़लमियान, मालिके दो जहान, हादिये इन्सो जान हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़क़्र (या'नी ज़ाहिरी मालो अस्बाब का कम होना) इज़्तिरारी नहीं था बल्कि इख़्तियारी[1] था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़्र को दुन्यावी तवंगरी पर और आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ दी। और उस शख़्स की ता'रीफ़ फ़रमाई है जो कम माल पर क़नाअ़त करे, जिसे रोज़ी ब क़-दरे ज़रूरत अ़ता की गई हो लेकिन ज़ौक़ो शौक़ के साथ इबादत में मस्रूफ़ रहे। चुनान्चे,

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्रु رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तह़क़ीक़ फ़लाह़ पा गया वोह शख़्स जिस ने इस्लाम क़बूल किया और उसे ब क़-दरे ज़रूरत रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने उसे

.....

1 : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़क़्रे मुबारक के इख़्तियारी होने पर कई अह़ादीसे करीमा दलालत करती हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़्र को ख़ुद इख़्तियार फ़रमाया। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तो ह़दीसे क़ुदसी में ये इर्शाद फ़रमाया : ''اِنْ شِئْتَ نَبِیًّا عَبْدًا اَوْاِنْ شِئْتَ نَبِیًّا مَلِکًا'' तर्जमा : अगर आप चाहो तो ''नबी अ़ब्द'' बन जाओ और अगर चाहो तो तुम्हें ''बादशाह नबी'' बना दूं।'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को फ़क़्र और बादशाही के दरमियान इख़्तियार अ़ता फ़रमाया था मगर बेकसों के आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़्र को पसन्द फ़रमाया और आप की दुआ़ येह होती थी : '' اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ '' तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मिस्कीनी और फ़क़्र की ह़ालत में ज़िन्दा रख और इसी ह़ालत में वफ़ात दे और मुझे ब रोज़े क़ियामत भी मसाकीन के गिरोह में उठाना।''(जामेउ़त्तिरमिज़ी, अल ह़दीस:2252, स.1888)

क़नाअ़त की दौलत से नवाज़ा हो ।" (जामेइ़त्तिरमज़ी, كتاب الزهد، باب ماجاء فى الكفاف والصبر عليه अल ह़दीस:2348, स.1888)

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि रसूलों के सालार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा क़ाबिले रश्क दोस्त वोह मो'मिन है जो कम माल के सबब हल्के बोझ वाला हो, उसे नमाज़ से ह़िस्सा दिया गया हो, अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत अह़सन अन्दाज़ से बजा लाता हो, तन्हाई और पोशीदगी में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता हो, लोगों में छुपा हुवा हो (या'नी शोहरत न रखता हो), उस की त़रफ़ उंगलियों से इशारे न किये जाते हों और उसे ब क़-दरे ज़रूरत रिज़्क़ दिया गया हो और वोह इस पर सब्र करता हो ।"

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उंगलियों से ज़र्ब लगाते हुए फ़रमाया : "और उस की मौत जल्द वाक़ेअ़ हो जाए, उस पर रोने वाले कम हों और उस का विरसा कम हो ।" और फिर इर्शाद फ़रमाया : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर मक्के की वादी को पेश किया कि वोह उसे मेरे लिये सोना बना दे तो मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं, ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! बल्कि मैं चाहता हूं कि एक दिन खाऊं और एक दिन भूका रहूं ।"

या येह इर्शाद फ़रमाया : "तीन दिन खाऊं और तीन दिन भूका रहूं, जब भूका रहूंगा तो तेरे हुज़ूर गिर्या व ज़ारी और तेरा ज़िक्र करूंगा और जब खाऊंगा तो तेरा शुक्र अदा करूंगा और तेरी ह़म्दो सना बजा लाऊंगा । (अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:2347)

(3).... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से एक त़वील ह़दीस मरवी है, (उस में येह भी है) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मालिके कौनो मकान, मक्की म-दनी

सुल्तान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसी चटाई पर आराम फ़रमा रहे थे जिस पर कुछ बिछा हुवा न था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक सर के नीचे चमड़े का एक तक्या था जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस क़दमों की त़रफ़ ''सलम'' दरख़्त के पत्तों का ढेर लगा हुवा था और सरे अक़्दस के पास चमड़ा लटक रहा था। मैं ने देखा कि उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू पर चटाई के निशान पड़ गए थे, येह देख कर मैं रोने लगा।''

नूर के पैकर, तमाम नबिय्ये के सरवर, द जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्यूं रोते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ैसरो किस्रा दुन्या की आसाइशों और ने'मतों में हैं जब कि आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि उन के लिये दुन्या की आरिज़ी ने'मतें हों और तुम्हारे लिये आख़िरत की अबदी राह़तें ?'' (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الطلاق، باب فی الایلاء.....الخ अल ह़दीस:3692, स.930)

(4).... ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ब बिन इ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िले लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे को मुतग़य्यिर पाया मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा मुतग़य्यिर क्यूं है ?'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तीन दिन हो गए मेरे पेट में कोई ऐसी चीज़ नहीं गई जो किसी जानदार के पेट में जाती है।''

हज़रते सय्यिदुना कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं कुछ लाने के लिये चला गया और रास्ते में देखा एक यहूदी अपने ऊंटों को पानी पिला रहा था, मैं ने उस के ऊंटों को पानी पिलाया और हर डोल के इवज़ एक खजूर ब तौ़रे उजरत ली, फिर सारी खजूरें इकट्ठी कर के हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर दीं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ कअ़ब ! येह कहां से लाए हो ?" तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुआ़मला अ़र्ज़ कर दिया तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ कअ़ब ! क्या तुम मुझ से मह़ब्बत करते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप पर कुरबान, जी हां ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।" इर्शाद फ़रमाया : "जो मुझ से मह़ब्बत रखता है फ़क़्र उस पर इस से जल्दी आता है जितना पानी अपने गढ़े की त़रफ़ जाता है, अ़नक़रीब तुम पर भी आज़्माइश आएगी पस इस के लिये तैयार रहना।"

(फिर कुछ दिन के बा'द) हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को न पाया तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से पूछा : "कअ़ब को क्या हुवा ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "वोह बीमार हैं।" तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए और उन के घर पहुंच कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ कअ़ब ! तेरे लिये ख़ुशख़बरी हो।" (येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ने कहा : "ऐ कअ़ब ! तुझे जन्नत की ख़ुशख़बरी हो।" तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाने वाली कौन है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह मेरी वालिदा हैं।" हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ कअ़ब की

मां ! तुझे क्या मा'लूम ? हो सकता है कि कअ़ूब ने ऐसी बात की हो जो उस को नफ़्अ़ न दे । और वोह कुछ जम्अ़ किया हो जो उसे किफ़ायत न कर सके।

(अल मो'जमुल अवसत़, अल ह़दीस:7157, जि.5, स.227)

हर ने'मत के बारे में सुवाल होगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "एक दिन या रात को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर से निकले तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी बाहर खड़े हैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हें इस वक़्त क्या चीज़ घरों से बाहर ले आई ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! भूक ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं भी इसी चीज़ के सबब घर से निकला हूं जिस ने तुम्हें घर से निकाला है, ठहरो ।" तो वोह दोनों आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास रुक गए फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक अन्सारी के घर तश्रीफ़ ले गए लेकिन वोह घर में मौजूद न थे, जब उस अन्सारी की बीवी ने देखा तो ख़ुशी से कहने लगी : "मरह़बा और ख़ुश आमदीद ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस अन्सारी के बारे में पूछा : " वोह कहां हैं ?" अ़र्ज़ की : "वोह हमारे लिये मीठा पानी लेने गए हैं ।"

जब वोह अन्सारी वापस लौटे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के दोनों साह़िबों को देख कर कहा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ! आज मेरे मेहमानों से बढ़ कर मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमान किसी के नहीं ।" फिर वोह जा

कर उन के लिये खजूर का एक ख़ोशा ले आए जिस में अधपकी खजूरें, छूहारे और ताज़ा खजूरें थीं, उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''आप येह तनावुल फ़रमाएं।'' और ख़ुद छुरी संभाल ली तो आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : ''दूध देने वाली बकरी ज़ब्ह़ न करना।'' पस उस ने उन के लिये बकरी ज़ब्ह़ की, सब ने उस बकरी का गोश्त खाया, खजूरें खाईं और पानी पिया। जब सब ने सैर हो कर खा पी लिया तो हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र और उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इर्शाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! ब रोज़े क़ियामत तुम से इन ने'मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा, तुम्हें भूक ने घर से निकाला फिर वापस होने से पहले येह ने'मतें मिल गईं।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الاشربہ، باب جواز استتباعہ.....الخ अल ह़दीस:5313, स.1041)

ज़ोहद में मक़ामे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم

ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن भी अपने म-दनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की मुकम्मल इत्तिबाअ़ करते थे, इन में से बा'ज़ के ज़ोहदो तक़्वा को यहां बयान किया जाता है।

(1).... म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم के घर वाले :

सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा,** ह़ज़रते सय्यिदतुना **फ़ातिमतुज़्ज़हरा**, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم का ज़िक्र किया जाता है जो अहले बैत और हुजूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से क़रीबी रिश्तेदार हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि एक दिन हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के हां तश्रीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे दोनों बेटे या'नी ह़ज़राते ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا कहां हैं ?'' ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : ''आज जब हम ने सुब्ह़ की तो हमारे घर में खाने के लिये कोई चीज़ नहीं थी तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुझ से फ़रमाया कि ''मैं इन दोनों को कहीं ले जाता हूं, मुझे डर है कि येह तेरे पास (भूक की वजह से) रोएंगे और तुम्हारे पास उन्हें खिलाने को कुछ नहीं।'' पस वोह फ़ुलां यहूदी की त़रफ़ गए हैं।''

तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उधर तश्रीफ़ ले गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां पहुंचे तो देखा कि दोनों शहज़ादे ह़ौज़ में खैल रहे हैं और कुछ बची हुई खजूरें उन के सामने पड़ी हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ अ़ली ! क्या मेरे बेटों को गरमी की शिद्दत से पहले पहले घर नहीं ले जाओगे ?'' ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज जब हम ने सुब्ह़ की तो हमारे घर में खाने के लिये कुछ नहीं था, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थोड़ी देर बैठ जाएं तो मैं ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लिये येह बची हुई खजूरें चुन लूं।'' पस हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तश्रीफ़ फ़रमा हो गए। और ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने बची हुई खजूरें इकठ्ठी कर के एक कपड़े में जम्अ़ कीं फिर चल दिये, एक शहज़ादे को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने और दूसरे को ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने उठा लिया यहां तक कि उन को घर पहुंचा दिया।''

(अल मो'जमुल कबीर, जि.22, स.422)

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

ज़ोहदो तक़्वा वाले इन सरदारों में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। मैं कभी भूक की शिद्दत से अपना पेट ज़मीन से लगा देता और कभी अपने पेट पर पत्थर बांध लेता, एक दिन मैं लोगों की गुज़रगाह पर बैठा हुवा था (जब कि भूक की शिद्दत थी) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से गुज़रे तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से क़ुरआने पाक की एक आयत का मत़लब पूछा और पूछने की ग़-रज़ येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे अपने साथ घर ले जाएं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गुज़र गए और मुझे साथ चलने को न कहा, फिर मेरे पास से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गुज़रे उन से भी मैं ने क़ुरआन की एक आयत के बारे में पूछा और ग़-रज़ येही थी कि मुझे अपने साथ घर ले जाएंगे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी गुज़र गए और मुझे अपने साथ न लिया।

इस के बा'द दो जहां के वाली हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रने लगे तो मुझे देख कर मुस्कराए और मेरे चेहरे पर भूक के आसार और मेरे दिल की तमन्ना को समझ गए फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू हुरैरा!'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''لَبَّیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ या'नी मैं ह़ाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।'' फ़रमाया : ''आओ चलें।''

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चले और मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल दिया।

पस हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिले लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और मुझे भी इजाज़त अ़ता फ़रमाई जब अन्दर गए तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक प्याले में दूध देखा, तो घर वालों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह दूध कहां से आया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "फ़ुलां शख़्स या फ़ुलां औ़रत (यहां रावी को शक है) ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये तोहफ़ा भेजा है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा !" मैं ने अ़र्ज़ की : "لَبَّيْکَ يَا رَسُوْلَ الله ! या'नी मैं ह़ाज़िर हूं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।" इर्शाद फ़रमाया: "अहले सुफ़्फ़ा[1] के पास जाओ और उन सब को मेरे पास बुला लाओ।"

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि "अहले सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे, अहलो इयाल, माल और किसी शख़्स के पास नहीं जाते थे। जब सरकारे दो आ़लम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कोई "स-दक़ा" आता तो उसे अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को भेज देते और ख़ुद उस में से कुछ न लेते और जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में कोई हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) आता तो अहले सुफ़्फ़ा को भेजते, ख़ुद भी उस में से लेते और उन्हें भी साथ शरीक करते। फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "मुझ पर येह मुआ़मला

1 : मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में मज्मअ़ बिह़ारुल अन्वार के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : "اهل الصفة فقراء المهاجرين ومن لم يكن له منهم منزل يسكنه فكانوا ياوون الى موضع مظلل فى مسجد المدينة' तर्जमा : अहले सुफ़्फ़ा मुहाजिरीन फ़ुक़रा में से थे और जिस के लिये घर न होता वोह वहीं ठहरता, पस अहले सुफ़्फ़ा मस्जिदे नबवी में एक छतदार जगह में रहते थे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.8, स.64)

बहुत शाक़ गुज़रा और मैं ने अपने दिल में कहा कि येह दूध अहले सुफ़्फ़ा को किफ़ायत नहीं करेगा, मैं इस का ज़ियादा हक़दार था कि येह दूध पीने को मिलता और इस से अपनी कमज़ोरी दूर करता पस जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर आए थे तो मुझे पीने का हुक्म फ़रमा देते, पस अगर मैं ने येह दूध उन को पिला दिया तो मुझे इस में से कुछ भी मिलने की उम्मीद नहीं, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़त भी ज़रूरी है, इस लिये मैं जा कर अहले सुफ़्फ़ा को बुला लाया, उन्हों ने आ कर दाख़िल होने की इजाज़त चाही, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़ता फ़रमाई और वोह सब घर में आ कर बैठ गए।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू हुरैरा'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं हाज़िर हूं।'' इर्शाद फ़रमाया : ''पियाला उठाओ और इन को पिलाते जाओ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं ने पियाला उठाया और एक शख़्स को दिया उस ने पीना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह सैराब हो गया तो उस ने मुझे वापस कर दिया, फिर दूसरे शख़्स को पियाला दिया उस ने भी पिया ह़त्ता कि वोह भी सैराब हो गया तो उस ने पियाला मुझे वापस कर दिया, इसी त़रह़ हर एक पी कर पियाला मुझे लौटा देता ह़त्ता कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गया और तमाम के तमाम लोग सैराब हो गए।

फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पियाला ले कर अपने दस्ते मुबारक में पकड़ लिया और मेरी त़रफ़ देख कर तबस्सुम फ़रमाने लगे और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू हुरैरा !'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''لَبَّیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ'' या'नी मैं हाज़िर हूं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं और आप रह गए हैं।'' मैं

ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने सच कहा ।'' रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बैठो और पियो ।'' मैं बैठ गया और दूध पिया ।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर फ़रमाया : ''और पियो ।'' ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''मैं बराबर पीता जाता था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार इर्शाद फ़रमाते : ''और पियो ।'' यहां तक कि मैं ने अ़र्ज़ की : ''क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा ! अब तो जगह ही नहीं बची ।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तो मुझे दिखाओ ।'' मैं ने पियाला आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और बिस्मिल्लाह पढ़ कर बाक़ी दूध पी लिया ।'' (सह़ीह़ुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم.....الخ अल ह़दीस:6452, स.542)

क्यूं जनाबे बू हुरैरा था वोह कैसा जामे शीर
जिस से सत्तर साह़िबों का दूध से मुंह फिर गया

(ह़दाइके बख़्शिश)

(3).... ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

दुन्या में ज़ाहिदीन के पेश्वाओं मे ंसे एक ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी हैं । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अल अर्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइ़य्यत में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में हिजरत की । जिस का अज्रो सवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां साबित हो गया । हम में से बा'ज़ वोह हैं जिन का विसाल हो गया और उन्हें दुन्या में कोई अज्र नहीं

मिला। उन्हीं में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं जो ग़ज़्वए उहुद के दिन शहीद हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कफ़न के लिये सिवाए एक चादर के कुछ नहीं था जब हम उस चादर को उन के सर पर डालते तो पाउं ज़ाहिर हो जाते और जब पाउं छुपाते तो सर ज़ाहिर हो जाता, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''चादर को उन के सर पर डाल दो और पाउं पर इज़्ख़र (एक घास का नाम) डाल दो। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''और हम में से बा'ज़ों की मेह़नत का फल पक चुका है और उस को चुन चुन कर खा रहे है।''

(सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الجنائز، باب فی کفن المیت अल ह़दीस:2177, स.625)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''हम हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे, इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस ह़ाल में हमारे पास आए कि उन के बदन पर सिर्फ़ एक फटी पुरानी पैवन्द लगी हुई चादर थी।'' जब हुज़ूर रह़मते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को देखा तो रो पड़े कि कल जो आसाइशों और ने'मतों में रहता था आज इस ह़ालत में है।

फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी जब तुम में से कोई सुब्ह़ में एक लिबास पहनेगा और शाम में दूसरा लिबास पहनेगा, उस के सामने (खाने वग़ैरा का) एक पियाला रखा जाएगा और दूसरा उठाया जाएगा। और तुम अपने घरों पर इस त़रह़ पर्दे लटकाओगे जिस त़रह़ का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर पर्दा है।'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन दिनों हम

आज की ब निस्बत बेहतर होंगे क्यूंकि इबादत के लिये (ज़ियादा) फ़ारिग़ होंगे और हम तफ़क्कुरात की तक्लीफ़ से आज़ाद हों।'' तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं। तुम उस दिन की ब निस्बत आज बेहतर हाल में हो।'' (जामेइत्तिरमिज़ी, کتاب صفۃ القیامۃ، باب حدیث علی.....الخ अल हदीस:2476, स.1901)

(4)....हज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम बिन उ़त्बा बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार करने वालों में से एक हज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम बिन उ़त्बा बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम बिन उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बीमार थे कि हज़रते सय्यिदुना अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन की बीमार पुर्सी के लिये आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रोते हुए पाया, हज़रते सय्यिदुना अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''ऐ मामूं जान! आप क्यूं रोते हैं? क्या दर्द ने आप को परेशान कर रखा है या दुन्या की हिर्स है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : ''हरगिज़ नहीं बल्कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से एक अ़हद लिया था जिसे हम ने पूरा न किया।'' हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''वोह कौन सा अ़हद था?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : ''मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''माल जम्अ़ करने के मुक़ाबले में ''एक ख़ादिम'' और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के लिये ''एक सुवारी'' काफ़ी है।'' (फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया) और आज मैं अपने पास माल जम्अ़ पाता हूं।''

पस जब हुज़रते सय्यिदुना अबू हाशिम बिन उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तर्के को शुमार किया गया तो सिर्फ़ 30 दिरहम की मिक़्दार को पहुंचा, और इस हिसाब में वोह बरतन भी शामिल था जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आटा गूंधा करते और उसी में खाना खाते थे।''

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, *کتاب التوبۃ والزھد* अल ह़दीस:508, जि.4, स.95)

(5).... ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

दुन्या में ज़ोहद इख़्तियार करने वालों में एक नाम ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का भी है, इन को ''सल्मान अल ख़ैर'' भी कहा जाता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान अल ख़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर घबराहट के आसार दिखाई दिये, लोगों ने पूछा : ''ऐ अ़ब्दुल्लाह के बाप ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को किस चीज़ ने परेशान कर दिया है ? ह़ालां कि आप तो भलाई के कामों में सबक़त ले जाने वाले थे और आप तो रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कई ग़ज़्वाते ह़सना और बड़ी बड़ी फ़ुतूह़ात में शरीक रहे।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मुझे येह बात परेशान किये हुए है कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब , मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से जुदा होते वक़्त एक अ़हद लिया था कि ''तुम में से हर शख़्स को एक मुसाफ़िर जितना ज़ादेराह काफ़ी है।'' और येही वोह बात है जिस ने मुझे परेशान किया है।''

ह़ज़रते आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का माल जम्अ़

किया गया तो उस की क़ीमत सिर्फ़ 15 दिरहम के बराबर थी।''

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, *کتاب التوبۃ والزھد* अल हदीस:5053, जि.4, स.96)

दुन्या के बारे में फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن दुन्या में ज़ोहद (या'नी दुन्या से कनाराकशी) इख़्तियार किये रहे क्यूंकि दुन्या उन का दाइमी घर नहीं था यक़ीनन घर तो आख़िरत है और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن के लिये दुन्या के बारे में बहुत सी मिसालें बयान फ़रमाईं। चुनान्चे,

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूलों के सालार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक चटाई पर सो गए, जब उठे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू मुबारक पर चटाई के निशान थे, हम ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये नर्म बिस्तर बिछा देते।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे दुन्या से कोई ग़-रज़ नहीं, मैं दुन्या में उस मुसाफ़िर की त़रह़ हूं जो एक दरख़्त के साए में (कुछ देर) आराम करता है और फिर कूच कर जाता है और उस दरख़्त को छोड़ देता है।''

(जामेइत्तिरमिज़ी, *کتاب الزھد، باب حدیث مالدنیا...الخ* अल हदीस:2377, स.1890)

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना मस्तूर बिन शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि, अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम !

आख़िरत के मुक़ाबले में दुन्या इतनी सी है जैसे कोई अपनी इस उंगली को समुन्दर में डाले तो वोह देखे कि उस उंगली पर कितना पानी लाया।'' इस ह़दीस के ''यह़या'' नामी रावी ने शहादत की उंगली से इशारा किया।

(सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الجنۃ، باب فناء الدنیا अल ह़दीस:7197, स.1173)

(3).... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ़लिया के किसी ह़िस्से से आते हुए बाज़ार से गुज़रे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों त़रफ़ लोग थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र बकरी के एक मुर्दा बच्चे के पास से हुवा जिस का एक कान छोटा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का कान पकड़ कर उठाया और इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से कौन इसे एक दिरहम में ख़रीदना चाहेगा।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''हम इसे किसी भी चीज़ के बदले में लेना पसन्द नहीं करत के, हम इस का क्या करेंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम पसन्द करते हो कि येह तुम को मिल जाए।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर येह ज़िन्दा होता तब भी इस में ऐ़ब था कि इस का एक कान छोटा है तो फिर जब कि येह मुर्दा है कोई इसे कैसे लेगा ?'' हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जैसे तुम्हारी नज़रों में येह मुर्दा बच्चा कोई वुक़अ़त नहीं रखता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या इस से भी ज़ियादा ह़क़ीर है।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الزھد والرقاق، باب الدنیا سجن.....الخ अल ह़दीस:7418, स.1191)

(4)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बकरी के एक ख़ारिश ज़दा बच्चे के पास से

गुज़रे जिस को उस के मालिकों ने घर से निकाल दिया था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम ख़याल करते हो कि येह बकरी का बच्चा अपने मालिकों की नज़र में बे वुक़्अ़त था ?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस त़रह़ येह ख़ारिश ज़दा बच्चा अपने मालिकों के नज़्दीक ह़क़ीर है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या इस से बढ़ कर ह़क़ीर है।'' (अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, जि.3, अल ह़दीस:8372, स.240)

(5)..... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या की ह़ैसिय्यत मच्छर के पर के बराबर भी होती तो वोह इस दुन्या से किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट भी पीने को न देता।'' (जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب ماجاء فی ھوان الدنیا...الخ अल ह़दीस:2320, स.1885)

(6).... ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक गुरोह ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम्हारे पास खाना होता है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : ''क्या तुम्हारे पास पानी भी है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''क्या तुम उसे ठंडा भी करते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : ''इन दोनों (या'नी खाने और पानी) का अन्जाम भी दुन्या के अन्जाम की त़रह़ है (कि जैसे खाना और पानी ग़लाज़त बन जाता है

दुन्या भी फ़ानी हो जाएगी) जब तुम में से कोई अपने घर के पिछवाड़े की त़रफ़ (पेशाब करने) जाता है तो उस की गन्दगी की बदबू की वजह से अपने नाक को पकड़ लेता है।''

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस:6119, जि.6, स.248)

(7).... ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ूब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि मालो दौलत की ह़िर्स और ह़ुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं।'' (जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب حدیث ماذئبان جائعان अल ह़दीस:2376, स.1890)

नफ़्से मो'मिन दुन्या से मुत्मइन क्यूं ?

दुन्या में बन्दए मो'मिन का दिल उस वक़्त ख़ुश और मुत्मइन रहता है जब तक उस की नज़र अपने से निचले लोगों (के मालो दौलत) पर होती है और जब अपने से ऊपर वालों को देखता है तो उस की ज़िन्दगी अजीरन और बदमज़ा हो जाती है और उस के ईमान की सलामती ख़त़रे में पड़ जाती है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''(दुन्या के मुआ़मले में) अपने से नीचे वालों को देखो और अपने से ऊपर वालों को मत देखो, येह तुम्हारे लिये बेहतरीन नसीह़त है ताकि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें न खो बैठो।''

(सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الزھد، باب الدنیا سجن.....الخ अल ह़दीस:7430, स.1191)

तुम तो बादशाह हो :

सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''क्या हम फ़ुक़रा मुहाजिरीन में से नहीं हैं ?'' तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से फ़रमाया : ''क्या तुम्हारी बीवी है जिस के साथ तुम रहते हो ?'' अ़र्ज़ की : ''हां ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तेरे पास रहने की जगह है ?'' अ़र्ज़ की : ''हां ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम तो अग़्निया में से हो ।'' उस ने कहा : ''मेरा एक ख़ादिम भी है ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''फिर तो तुम बादशाह हो ।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़र, अल ह़दीस:7462, स.1196)

इब्ने आदम का वावेला :

दुन्या में मो'मिन का नफ़्स उस वक़्त ख़ुश होता है जब वोह इस बात की ह़क़ीक़त को जान ले कि उस का ह़क़ीक़ी माल वोह है जो उस ने खा कर ख़त्म कर दिया, जो पहन कर बोसीदा कर दिया और जिसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा कर के आख़िरत के लिये मह़फ़ूज़ कर लिया और इस के इ़लावा बाक़ी सारा माल वोह अ़न क़रीब अपने वुरसा के लिये छोड़ जाएगा । चुनान्चे,

(1).... ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़रफ़ के वालिद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मैं हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूरए اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُر (पा.30, तकासुर) की तिलावत फ़रमा रहे थे । चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इब्ने आदम कहता है : ''मेरा माल मेरा माल ।'' फिर फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता : ''ऐ इब्ने आदम ! तेरा माल तो वोही है जो तू ने खा कर ख़त्म कर दिया, या जो पहन कर बोसीदा कर दिया या वोह जो स-दक़ा कर के आख़िरत के लिये भेज दिया ।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:7420, स.1191)

(2)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''बन्दा कहता है ''मेरा माल मेरा माल'' लेकिन उस का माल तो सिर्फ़ तीन त़रह़ का है (1) जो खा कर ख़त्म कर दिया (2) या जो पहन कर बोसीदा कर दिया (3) या जो किसी को स-दक़ा दे कर आगे (आख़िरत के लिये) भेज दिया, इस के इ़लावा जो भी माल है वोह तो जाने वाला है और वोह उसे लोगों के लिये छोड़ देगा।'' (अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:7422)

अ़मल हमेशा इन्सान के साथ रहता है :

(3)..... ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान : ''मय्यित के साथ तीन चीज़ जाती हैं, दो वापस हो जाती हैं और एक बाक़ी रह जाती है, उस के अहल, माल और अ़मल साथ जाते हैं तो उसके अहलो माल वापस लौट जाते हैं और उस का अ़मल साथ रहता है।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:7424)

आख़िरत की तैयारी कर लो

जब दुन्या एक ख़त्म हो जाने वाला साया है और फ़ानी होने वाला सामान है तो तुझ पर लाज़िम है कि तू आख़िरत के लिये मुकम्मल एहतिमाम कर। चुनान्चे,

(1).... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि तुम्हारा पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''ऐ इब्ने आदम ! तू ख़ुद को मेरी इ़बादत के लिये फ़ारिग़ कर ले मैं तेरे

दिल को ग़िना से और तेरे हाथों को रिज़्क़ से भर दूंगा। और ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इबादत से दूरी इख़्तियार न कर (वरना) मैं तेरे दिल को फ़क़्र से भर दूंगा और तेरे हाथों को दुन्यावी कामों में मस्रूफ़ कर दूंगा।'' (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, किताबुर्रक़ाक़, अल ह़दीस:7996, जि.5, स.464)

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस ने दुन्या से मह़ब्बत की वोह आख़िरत में नुक़्सान उठाएगा और जिस ने आख़िरत से मह़ब्बत की उस को दुन्या में नुक़्सान होगा, तो तुम बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) पर फ़ना होने वाली (दुन्या) को तरजीह़ न दो।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:7967, स.454)

(3)..... ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी लम्बी नमाज़ अदा फ़रमाते थे कि मुबारक क़दमों में वरमा आ जाता या उन में ज़ख़्म हो जाते और जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के बारे में अ़र्ज़ की जाती (कि इतनी मशक़्क़त किस लिये ?) तो इर्शाद फ़रमाते : ''क्या मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب الصبر عن محارم اللہ, अल ह़दीस:6470, स.543)

जन्नत और दोज़ख़ तुम से क़रीब हैं

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत तुम से इस से

भी ज़ियादा क़रीब है जितना तुम्हारे जूते का तस्मा, जूते से क़रीब है और दोज़ख़ भी इसी त़रह़ है (या'नी बहुत ज़ियादा क़रीब है) हां ! येह बात है कि जन्नत को तकालीफ़ से और दोज़ख़ को शहवतों और लज़्ज़तों से ढांप दिया गया है ।'' या'नी राहे जन्नत में मसाइब व तकालीफ़ हैं जब कि शहवात दोज़ख़ में पहुंचाती हैं । (सहीह़ुल बुख़ारी, *کتاب الرقاق، باب حجبت النار بالشھوات* अल ह़दीस:6488, स.544)

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जहन्नम को नफ़्सानी शहवात से ढांप दिया गया है और जन्नत को तकालीफ़ से ढांप दिया गया है ।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:6487)

(3).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है रह़मते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया तो ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) को जन्नत की त़रफ़ भेजा और इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत और उस की इन ने'मतों को देखो जो मैं ने अहले जन्नत के लिये तैयार की हैं ।'' हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''तो जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) जन्नत में आए, जन्नत और अहले जन्नत के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तैयार कर्दा ने'मतें देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ''तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जो भी इस जन्नत के बारे में सुनेगा वोह ज़रूर इस में दाख़िल होने की कोशिश करेगा ।'' पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया और जन्नत को मशक़्क़तों और तकालीफ़ से ढांप दिया गया ।''

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से फ़रमाया : ''दोबारा

जाओ और जन्नत और उस की ने'मतों को देखो जो मैं ने जन्नतियों के लिये तैयार की हैं।'' हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) दोबारा जन्नत में गए तो क्या देखा कि उस को मशक़्क़तों और तकालीफ़ से ढांप दिया गया है, पस जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मुझे डर है कि अब इस में कोई भी दाख़िल नहीं हो सकेगा।''

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''अब दोज़ख़ की त़रफ़ जाओ और दोज़ख़ और उस के अ़ज़ाबात को देखो जो मैं ने अहले दोज़ख़ के लिये तैयार किये हैं।'' ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने जा कर देखा कि दोज़ख़ (की आग) का एक ह़िस्सा दूसरे पर चढ़ रहा है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! कोई भी ऐसा नहीं जो जहन्नम (की सख़्ती) के बारे में सुने और उस में दाख़िल हो (या'नी बचने की कोशिश करेगा) पस अल्लाह तआ़ला के हुक्म से जहन्नम को शहवात व लज़्ज़ात के पर्दों से ढांप दिया गया।''

फिर अल्लाह तआ़ला ने जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को हुक्म दिया : ''दोबारा जहन्नम की त़रफ़ जाओ।'' जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) गए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मुझे ख़ौफ़ है कि अब इस से कोई भी न बच पाएगा, बल्कि (शह्वात में मुब्तला हो कर) उस में जा पड़ेगा।'' (जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء خفت الجنۃ .....الخ अल ह़दीस:2560, स.1909)

ह़दीसे पाक की तशरीह़ :

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عليه رَحْمَةُ اللهِ القَوى, फ़त्हुल बारी, जिल्द 11, सफ़्ह़ा:273 पर इस ह़दीसे पाक की शरह़ करते हुए फ़रमाते हैं : "ह़दीसे पाक में आने वाले लफ़्ज़े "मकारिह" (या'नी तकालीफ़) से मुराद वोह अच्छे या बुरे आ'माल हैं जिन का एक मुसल्मान मुकल्लफ़ को मुजाहदए नफ़्स के लिये करने या छोड़ने का हुक्म दिया गया है जैसे इ़बादात की मुकम्मल अदाएगी और इन पर मुह़ाफ़ज़त इख़्तियार करना और अपने क़ौल और अ़मल के ज़रीए मम्नूआ़ते शर-इय्या से बचना। और अच्छे आ'माल बजा लाने और बुरे आ'माल तर्क करने पर लफ़्ज़े "मकारिह" (या'नी तकालीफ़) का इत़्लाक़ इस लिये किया गया है कि इ़बादात की अदाएगी और गुनाहों से बचने में आ़मिल को मशक़्क़त और सुऊ़बतें बरदाश्त करनी पड़ती हैं और इन में एक मुसीबत सब्र करना और हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के सामने सरे तस्लीम ख़म करना भी है।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : "और "शहवात" से मुराद वोह दुन्यावी उमूर हैं जिन के ज़रीए लज़्ज़त ह़ासिल की जाती है ख़्वाह शरीअ़त ने उस से बिला वासित़ा मन्अ़ किया हो या उस के करने से अह़कामाते इलाही عَزَّوَجَلَّ में से किसी हुक्म को तर्क लाज़िम आता हो। नीज़ मुश्तबह (जिन में शक हो) और वोह जाइज़ व मुबाह़ काम जिन पर अ़मल के बाइ़स ह़राम में पड़ने का ख़ौफ़ हो, सब इस (शहवात) में दाख़िल हैं। चुनान्चे

(4)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़िय्या बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "आदमी उस वक़्त तक मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं हो सकता जब तक ना जाइज़ कामों से बचने

के लिये जाइज़ व मुबाह़ कामों को न छोड़ दे।'' (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, کتاب الرقاق، باب ان الصالحین یشدد علیھم अल ह़दीस:7969, जि.5, स.454)

पस तकालीफ़ व मशक़्क़तों के इस बयाबान को सर करने के बा'द ही बन्दा जन्नत में दाख़िल हो सकता है और शहवात को तर्क कर के दोज़ख़ से छुटकारा पा सकता है, क्यूंकि इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी जन्नत में पहुंचाती है और गुनाह व ना फ़रमानी जहन्नम में ले जाती है और बा'ज़ अवक़ात इत़ाअ़त और मा'सिय्यत व ना फ़रमानी मा'मूली सी चीज़ों में भी पाई जाती है। चुनान्चे,

(5)..... ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बन्दा कोई बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी की करता है और वोह इस द–रजा व मक़ाम तक पहुंचती है जिस का उस को गुमान भी नहीं होता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के सबब क़ियामत तक के लिये अपनी रिज़ा व ख़ुश्नूदी लिख देता है, और कोइ बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी का कलिमा मुंह से निकालता है और वोह उस मक़ाम तक पहुंचता है जिस का उसे गुमान नहीं होता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की बात पर क़ियामत के दिन तक अपनी नाराज़गी लिख देता है।''

(जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب ماجاء فی قلۃ الکلام अल ह़दीस:2319, स.1885)

(6)..... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उन्हों ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि ''बन्दा कभी कोई ऐसी बात कह देता है जिस के सबब जहन्नम की इतनी गहराई में गिरता है जितना मश्रिक़ और मग़रिब का दरमियानी फ़ासिला है।''

(सह़ीह़ मुस्लिम, کتاب الزھد، باب حفظ اللسان अल ह़दीस:7481, स.1195)

प्यारे इस्लामी भाई ! थोड़ी सी भलाई (या'नी नेकी) भी मत छोड़ और ना ही मा'मूली सी बुराई (या'नी गुनाह) को इख़्तियार कर क्यूंकि तुझे नहीं मा'लूम कि कौन सी नेकी के सबब अल्लाह तआ़ला तुझ पर रह़म फ़रमा दे और किस बुराई की वजह से अल्लाह तआ़ला तुझ से नाराज़ हो जाए।

फ़ुक़रा और उन की मजालिस को ह़क़ीर न जानो

प्यारे इस्लामी भाई ! जो चीज़ तुझे जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूर कर देगी वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों का एह़तिराम है[1]..... बिल्ख़ुसूस नेक व परहेज़गार फ़ुक़रा की ता'ज़ीम व तकरीम करना,..... उन की क़द्रो मन्ज़िलत को समझना,..... और उन से दोस्ती ऐसी हो जैसी तुम अग़्निया और मालदारों से करते हो,..... अगर वोह तेरे पास कोई ह़ाजत ले आएं तो अपने मन्सब व माल के ज़रीए उन की ग़म गुसारी कर,..... उन्हें ह़क़ीर मत जान हो सकता है कि वोह तुझ से बढ़ कर अल्लाह तआ़ला के क़रीब हों।

ज़ाहिद निगाहे तंग से किसी रिन्द को न देख
शायद कि उस करीम को तो है कि वोह पसन्द

फ़ुक़रा के फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबारका :

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से एक शख़्स का गुज़र हुवा तो

.....

1. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों के एह़तिराम के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला ''एह़तिरामे मुस्लिम'' मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ालआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद रहेगा।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने पास बैठे हुए शख़्स से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''उस के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस का शुमार नेक और शरीफ़ लोगों में होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तो ऐसा है कि अगर किसी को निकाह़ का पैग़ाम भेजे तो उस से शादी कर ली जाए और अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो उस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर कर ली जाए।''

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे फिर एक दूसरे शख़्स का वहां से गुज़र हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के बारे में भी इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''इस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारी क्या राय है ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस का शुमार फ़ुक़राए मुस्लिमीन (या'नी ग़रीबों) में होता है और येह ऐसा है कि अगर किसी को निकाह़ का पैग़ाम भेजे तो कोई उस से शादी न करे, किसी की सिफ़ारिश करे तो मन्ज़ूर न की जाए और अगर बात करे तो सुनी न जाए। अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह उस जैसे ज़मीन भर से बेहतर है।''

(सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الرقاق، باب فضل الفقر अल ह़दीस:6447, स.542)

(2)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! क्या तुम माल की कसरत को तवंगरी व ग़िना ख़याल करते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''और क्या तुम येह ख़याल करते हो कि माल की कमी का नाम फ़क़्र व मुफ़्लिसी है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ।''

तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''लेकिन मुआ़मला ऐसे नहीं, बेशक ह़क़ीक़ी तवंगरी दिल का तवंगर होना और ह़क़ीक़ी फ़क़्र (या'नी मुफ़्लिस होना) दिल का फ़क़्र है।''

फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से क़ुरैश के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम क्या कहते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जब वोह कुछ त़लब करता है अ़त़ा किया जाता है और जब ह़ाज़िर होता है तो इ़ज़्ज़त के साथ बिठाया जाता है।''

फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से अहले सुफ़्फ़ा के एक आदमी के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या तुम फ़ुलां शख़्स को पहचानते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।'' पस हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के अवसाफ़ बयान करते रहे और उस की ता'रीफ़ करते रहे यहां तक कि मैं उसे पहचान गया। तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां ! या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।'' इर्शाद फ़रमाया : ''उस के बारे में तुम क्या कहते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अहले मस्जिद (या'नी अहले सुफ़्फ़ा) के एक मिस्कीन व ग़रीब शख़्स हैं।'' हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''येह उस दूसरे जैसे ज़मीन भर से अफ़्ज़ल है।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या दूसरे को अ़त़ा की जाने वाली (ख़ूबियों वग़ैरा) में से कुछ भी इस को न दिया जाए ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''अगर उसे दिया जाए तो वोह उस का अहल है और अगर उसे न दिया जाए तो उस के लिये नेकी है।'' (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, کتاب الرقاق، باب فضائل اولیاء اللہ अल ह़दीस:7999, जि.5, स.465)

(3).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मह़ब्बत निशान है : ''फ़ुक़रा से मह़ब्बत करो और उन के पास बैठा करो और (ख़ुश अ़क़ीदा) अहले अ़रब को दिल से मह़बूब रखो और लोगों के जिन उ़यूब से तुम वाक़िफ़ हो उन से चश्मपोशी किया करो।'' (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, کتاب الرقاق، باب فی برجھنم.....الخ, अल ह़दीस:8017, जि.5, स.472)

अग़्निया से पहले जन्नत में जाएंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''ब रोज़े क़ियामत मुसल्मान फ़ुक़रा मालदारों से निस्फ़ दिन पहले जन्नत में दाख़िल होंगे और वोह निस्फ़ दिन पांच सौ साल के बराबर होगा।''

(जामेइ़त्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب ماجاء ان فقرا..... अल ह़दीस-2353, स.1888)

जन्नत में फ़ुक़रा ज़ियादा होंगे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मैं ने जन्नत के अन्दर झांका तो अहले जन्नत में फ़ुक़रा (या'नी ग़रीबों) को ज़ियादा देखा और दोज़ख़ के अन्दर झांका तो अहले दोज़ख़ में अग़्निया (या'नी मालदारों) और औ़रतों को ज़ियादा देखा।'' (अल मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नद अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ल आ़स, अल ह़दीस:6622, जि.2, स.582)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमियान, नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : ''दो मो'मिन जन्नत के दरवाज़े पर मुलाक़ात करेंगे, जिन में से एक दुन्या में ग़नी (या'नी मालदार) था और दूसरा फ़क़ीर (या'नी ग़रीब)। फ़क़ीर को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और ग़नी को जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा रोक दिया जाएगा। फिर उसे भी जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। जब फ़क़ीर उस से मिलेगा तो पूछेगा : ''ऐ भाई ! किस चीज़ ने तुझे (इतनी देर तक) रोक दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझे इतनी देर तक रोका गया ह़त्ता कि मैं तेरे बारे में ख़ौफ़ करने लगा।'' ग़नी जवाब देगा : ''ऐ मेरे भाई ! तुम्हारे बा'द मुझे इन्तिहाई तक्लीफ़देह और ना पसन्दीदा रुकावट का सामना था और तुम तक पहुंचते पहुंचते (रोके जाने के सबब) मेरा इतना पसीना निकला कि अगर उस को नमकीन और कड़वी बोटी चरने वाले एक हज़ार प्यासे ऊंट पीने के लिये उतरते तो सैराब हो जाते।'' (अल मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नद अ़ब्दुल्लाह बिन अल अ़ब्बास, अल ह़दीस:2771, जि.1, स.652)

बा'ज़ अल्फ़ाज़े ह़दीस के मआ़नी :

मज़्कूरा ह़दीसे पाक के अ़रबी मतन में येह लफ़्ज़ ''**महबस**'' **ह़ब्स** के मा'ना में है या'नी रोकना और ''**ह़म्ज़**'' एक बोटी का नाम है जिस का ज़ाइक़ा कड़वा होता है और येह ऊंटों के लिये ऐसी ही (लज़ीज़) है जैसे इन्सान के लिये फल क्यूंकि ऊंट जब मीठी बोटी चरने से उक्ता जाता है तो उस बोटी (या'नी ह़म्ज़) को खाने की ख़्वाहिश करता है और उस की त़रफ़ हो जाता है पस जब ''ह़म्ज़'' चर लेता है तो उस के ऊपर पानी पीता है।

दर्से ह़दीस :

प्यारे इस्लामी भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए (आमीन),...... इस ह़दीसे पाक में ग़ौर कर,..... देख कि उस ग़नी को थोड़ी देर के लिये जन्नत में दाख़िले से रोक दिया गया.....तो उस के बदन से इतना पसीना निकला जो हज़ार प्यासे ऊंटों की सैराबी के लिये काफ़ी हो जाता,....... पस अगर तू भी ग़नी (या'नी मालदार) है तो अपने मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र कर ले,....... और अपना माल अच्छी जगह ख़र्च कर,........ और अगर तू ग़रीब है तो अपनी इस ह़ालत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर,........ बिल्ख़ुसूस जब तुझे सिह़्ह़त और आ़फ़िय्यत की ने'मत भी दी गई है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन मिह़्सनल ख़त्मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़ले लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "तुम में जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की के उस का दिल मुत़्मइन, बदन तन्दुरुस्त और उस के पास एक दिन की ख़ूराक हो तो गोया उस के लिये दुन्या जम्अ़ कर दी गई है।"

(जामेइत्तिरमिज़ी, کتاب الزھد، باب فی الوصف....الخ अल ह़दीस:2346, स.1887)

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और मालो दौलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यसार बिन अ़ब्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "हम एक मजलिस में बैठे थे कि नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बालों पर पानी की तरी थी, हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़नाअ़त पसन्द व नेक त़बीअ़त देखते हैं।"

इर्शाद फ़रमाया : ''हां ! ऐसा ही है ।'' फिर लोग ग़िना या'नी मालदारी की बातें करने लगे तो अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हो उस के अमीर होने में ह-रज नहीं और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता है उस के लिए सिह़्ह़त, मालदारी से ज़ियादा बेहतर है और क़नाअ़त पसन्द व नेक त़बीअ़त होना कई ने'मतों का मज्मूआ़ है।'' (अल मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बल, احادیث رجال من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم, अल ह़दीस:23218, जि.9, स.53)

दर्से ह़दीस :

पस ग़िना या'नी मालदारी बग़ैर तक़्वा के हलाकत है, क्यूंकि ऐसा शख़्स नाह़क़ त़रीक़े से माल इकठ्ठा करता है, ह़क़दार को मह़रूम कर देता है, और वोह उसे ना जाइज़ जगहों में ख़र्च करता है, और जो साह़िबे माल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखता है उस से ह़-रज व नुक़्सान दूर हो जाता है और उसे भलाई नसीब होती है। चुनान्चे,

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन कअ़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़्कूरा इर्शादात की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : ''(1) जब मालदार, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने लग जाए तो उस को दोहरा सवाब अ़त़ा किया जाता है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (माल के ज़रीए) उस का इम्तिह़ान लिया तो उसे इम्तिह़ान में पूरा उतरने वाला पाया और जिस का इम्तिह़ान लिया गया हो वोह उस की त़रह़ नहीं जिस का इम्तिह़ान न हुवा। (2) और बदन का तन्दरुस्त रहना इ़बादत करने में मुआ़विन होता है पस सिह़्ह़त एक अ़ज़ीम ने'मत है जब कि बीमार शख़्स इ़बादत करने से लाचार व आ़जिज़ होता है। और सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती के साथ ग़ुर्बत का होना का इस बात से बेहतर है कि लाचारी के साथ तवंगरी और मालदारी हो,

(3) क़नाअत पसन्दी व तबीअ़त का नेक होना एक ऐसा (रूहानी) सुरूर है जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को अपनी इताअ़त की तौफ़ीक़, (इबादत के लिये) उक्ताहट से पाक ज़िन्दगी और थकावट से पाक जिस्म अ़ता फ़रमाता है और उसे (दुन्या के) मुहीब ख़तरात से मामून कर देता है। और जब ज़िन्दगी ख़दशात व ख़तरात से महफ़ूज़ हो जाए और तंगी न रहे तो दिल जिला पाता है और नफ़्स मुत्मइन हो जाता है और ऐसा शख़्स ने'मतों से मालामाल हो जाता है।''

ग़िना अफ़्ज़ल है या फ़क़्र ?

इस मस्अले में तहक़ीक़ येह है कि न तो कुल्ली तौर पर फ़क़्र (या'नी ग़रीबी) को ग़िना (या'नी मालदारी) पर फ़ज़ीलत है और ना ही ग़िना कुल्ली तौर पर फ़क़्र से अफ़्ज़ल है क्यूंकि बहुत से अग़निया ऐसे हैं कि जिन को मालो दौलत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद और इबादत से ग़ाफ़िल नहीं करते और कितने ही फ़क़ीर ऐसे हैं जिन को ग़ुर्बत ने इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर रखा है। जब कि बहुत से पाक दामन फ़क़ीर ऐसे भी हैं जो अपने लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम पर राज़ी हैं और कितने ही मालदार ऐसे हैं कि मालदारी ने उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त से दूर कर दिया है। बहर हाल होना येह चाहिये कि ग़ुर्बत में बन्दा सब्र व रिज़ा का पैकर बना रहे और मालदारी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र और उस की सना बजा लाए क्यूंकि दुन्या की येह चन्द रोज़ा ज़िन्दगी ख़त्म होने और गुज़र जाने वाली है।

आ'माले आख़िरत में सुस्ती न करो

मुसल्मान इस बात पर यक़ीन रखता है कि मौत जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब है इस लिये इबादात को जल्द अदा करने के मुआमले में हरीस होता है,.... कोताही को तर्क कर देता है,..... पहली फ़र्स में

ता़आ़त व इ़बादात बजा लाता है,..... और मुकम्मल एहतिमाम के साथ अदा करता है,..... और येह कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नेकी के कामों में जल्दी करने की बहुत सी मिसालें क़ाइम की और बयान फ़रमाई हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने मदीनए मुनव्वरा में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे अ़स्र की नमाज़ पढ़ी तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम फेरने के बा'द जल्दी से उठे और लोगों की गरदनें फलांग कर अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी के हुजरे में तश्रीफ़ ले गए। लोग आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस जल्दी को देख कर घबरा गए, फिर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उने के पास तश्रीफ़ लाए तो लोगों को इस उ़जलत से मुतअ़ज्जिब देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे कुछ ''सोना'' याद आ गया जो हमारे घर में था मैं ने येह ना पसन्द किया के वोह मुझे (यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ से) रोके तो मैं ने उसे तक़्सीम करने का हुक्म दे दिया।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, کتاب الاذان، باب من صلی بالناس فذکر.....الخ अल ह़दीस:851, स.67)

रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم की इत़ाअ़त, सआ़दत की अ़लामत :

वोह मुसल्मान जिसे हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ मिल जाए वोह यक़ीनन सआ़दतमन्द है कि ऐसा शख़्स आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ देता है और मौत को हमेशा याद रखता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात

को कमज़ोर कर दे और मौत के बा'द आने वाली ज़िन्दगी के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ व लाचार वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर लम्बी उम्मीदें रखे।''

(शुअ़बुल ईमान, باب فی الزھد وقصر الامل अल ह़दीस:10546, जि.7, स.350)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द दाना वोह मो'मिन है जो मौत को कसरत से याद करे और उस के लिये अह़सन त़रीक़े पर तैयारी करे, येही (ह़क़ीक़ी) दाना लोग हैं।''

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:10549, स.351)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने सौ दीनार के इ़वज़ एक महीने के लिये एक बांदी ख़रीदी तो मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : ''क्या तुम उसामा पर तअ़ज्जुब नहीं करते जो महीने का सौदा करता है, यक़ीनन उसामा लम्बी उम्मीद वाला है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! जब मैं अपनी आंखें झपकता हूं तो येह गुमान करता हूं कि कहीं मेरी पल्कें खुलने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ क़ब्ज़ न फ़रमा ले और जब अपनी पल्कें उठाता हूं तो येह गुमान होता है कि कहीं उन्हें झुकाने से पहले ही मौत का वा'दा न आ जाए और जब कोई लुक़्मा मुंह में डालता हूं तो येह गुमान करता हूं कि मौत का उछ्छू लगने या'नी (मौत आने) से पहले उसे न निगल सकूंगा, ऐ लोगो ! अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो, क्यूंकि तुम से जो वा'दा किया जाता है वोह हो कर रहेगा।'' रावी कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस बांदी को अपना हाथ तंग

होने की वजह से ख़रीदा था (या'नी उस वक़्त माल मौजूद था, बा'द में नहीं ख़रीद सकते थे)

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:10564, स.355)

फ़िक्रे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم :

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खु़त़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! यक़ीनन दुन्या तुम्हारे लिये जाए अ़मल है तो अपने आ'माल को ब ख़ूबी पूरा करो । और तुम्हारा एक अन्जाम (मौत) है तो अपने अन्जाम की तैयारी करो । मुसल्मान दो ख़ौफ़ों के दरमियान रहता है (1) एक उस मुद्दत का ख़ौफ़ जो गुज़र चुकी, वोह नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के बारे में क्या फ़ैसला फ़रमाया है । और (2) दूसरे उस मुद्दत का ख़ौफ़ जो अभी बाक़ी है, वोह नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाता है पस बन्दे को चाहिये कि दुन्या में बुढ़ापा आने से क़ब्ल जवानी ही में आख़िरत के लिये ज़ादे राह इकठ्ठा कर ले, क्यूंकि तुम आख़िरत के लिये पैदा किये गए हो और दुन्या तुम्हारे लिये बनाई गई है, क़सम है उस ज़ात को जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मौत के बा'द (इ़बादत के लिये) थकने का कोई मौक़अ़ नहीं और दुन्या के बा'द जन्नत और दोज़ख़ के इ़लावा कोई घर नहीं मैं अल्लाह तआ़ला से अपने और तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार करता हूं ।"

(अल मर्जउ़स्साबिक़, अल ह़दीस:10571, स.360)

दुन्या की मज़म्मत पर फ़रामीने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ुत्बा देते वक़्त इर्शाद फ़रमाया करते थे : ''अपनी जवानी पर नाज़ां ख़ूबसूरत चेहरों वाले कहां गए ?..... कहां गए वोह बादशाह जिन्हों ने बड़ बड़े शहर ता'मीर किये और उन की ह़िफ़ाज़त के लिये ऊंची ऊंची दीवारें बनाईं ?..... और किधर चले गए वोह लोग जो जंगी मा'रिकों में फ़त्ह़ और ग़-लबा पाते थे ?..... उन के अज्ज़ा बिखर गए जब ज़माने ने उन्हें तबाह व बरबाद कर दिया और वोह क़ब्रों की तारीकी में चले गए (तो ऐ लोगो !) अपनी जानों को हलाकतों से बचाओ और जल्दी करो।''

(2) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को वसिय्यत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये दुन्या को फैला दिया है तो तुम उस में से ब क़-दरे ज़रूरत ही ह़िस्सा लेना।''

(3) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं, उस वक़्त वोह म-रज़ुल मौत में मुब्तला थे जब ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उन का सांस सीने में अटका हुवा देखा तो उस की मिसाल इस शे'र से बयान फ़रमाई :

तर्जमा : क्या सख़ी व बहादुर शख़्स को उस का मालो दौलत मौत के मुंह में जाने से बचा लेगा, उस दिन कि जब सांस ह़ल्क़ में अटक रहा होगा और सीना तंग हो जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ आख़िरत के मुआ़मले में सुस्ती को बिल्कुल पसन्द न करते थे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते थे : "हर काम में आहिस्तगी होनी चाहिये सिवाए आख़िरत के मुआ़मले में।"

और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ऐसे नहीं थे कि दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देते, चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की साह़िबज़ादी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने आप से अ़र्ज़ की : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपने इन कपड़ों के बजाए ज़ियादा नर्म व मुलाइम कपड़े पहनें और अपने इस खाने से ज़ियादा उ़म्दा खाना खाएं तो क्या ह़-रज है ? क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का रिज़्क़ वसीअ़ कर दिया है और आप को ख़ैरे कसीर अ़त़ा फ़रमाई है।" तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुझे सरज़निश करूंगा क्या तुम्हें याद नहीं कि अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़िन्दगी की ठाठबाठ पसन्द नहीं फ़रमाते थे ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी साह़िबज़ादी को बार बार येही कहते रहे ह़त्ता कि उन्हें रुला दिया फिर उन से इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे तौफ़ीक़ मिली तो मैं उन दोनों या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रह़ कठिन ज़िन्दगी इख़्तियार करूंगा हो सकता है मैं उन की पसन्दीदा ज़िन्दगी पा लूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें दुन्या इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए आख़िरत की तैयार करो, इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इस की त़रफ़ झुक जाओ,..... क्यूंकि दुन्या तो फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी रहने वाली,.... तो कहीं फ़ानी तुम्हें अपनी त़रफ़ न खींच ले और बाक़ी रहने वाली से ग़ाफ़िल कर दे,..... तुम फ़ानी होने वाली (दुन्या) पर बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को तरजीह़ दो,.... यक़ीनन दुन्या ख़त्म हो कर रहेगी,..... और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ही लौट कर जाना,..... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो क्यूंकि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ, अ़ज़ाब के आगे ढाल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वसीला है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने कूफ़ा में ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मुझे तुम पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ लम्बी उम्मीदों, और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी का है,..... क्यूंकि लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी ह़क़ से भटका देती हैं,.... ख़बरदार ! बेशक दुन्या पीठ फेरने वाली है और यक़ीनन आख़िरत आने वाली है,.... और इन दोनों ही के चाहने वाले हैं,.... पस तुम आख़िरत के चाहने वाले बनो और दुन्या के चाहने वाले न बनो,.... आज अ़मल है ह़िसाब नहीं और कल (क़ियामत में) ह़िसाब होगा, अ़मल का मौक़अ़ नहीं होगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी मजलिस में शरीक लोगों से इर्शाद फ़रमाया : ''तुम लोग हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن से ज़ियादा नमाज़ें पढ़ने वाले, उन से ज़ियादा रोज़े रखने वाले और उन से ज़ियादा जिहाद करने वाले हो लेकिन वोह ह़ज़रात तुम से बेहतर थे ।'' तो लोगों ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! इस की क्या वजह है ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह इस लिये कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن तुम से ज़ियादा दुन्या से कनारा कशी करने वाले और तुम से ज़ियादा आख़िरत में रग़बत रखने वाले थे ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ऐ बनी आदम ! तू सारी ज़मीन अपने पाउं तले रौंद डाल (और इस का मालिक बन जा) फिर भी तेरी क़ब्र ज़मीन के थोड़े से टुकड़े पर ही बनेगी,..... ऐ इब्ने आदम ! तेरी ज़िन्दगी दिनों में बटी हुई है जब भी एक दिन गुज़रता है तेरी ज़िन्दगी का कुछ ह़िस्सा कम हो जाता है,..... ऐ इब्ने आदम ! जिस दिन से तेरी मां ने तुझे जना है तू अपनी उ़म्र के ख़ातिमे की त़रफ़ बढ़ रहा है ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''बरोज़े क़ियामत दुन्या को एक बद सूरत नीली आंखों वाली बूढ़ी औ़रत के रूप में लाया जाएगा जिस के (डरावने)

दांत नज़र आ रहे होंगे और वोहे तमाम इन्सानों के सामने हो जाएगी, उन से पूछा जाएगा : "क्या तुम इस को जानते हो ?" वोह जवाब देंगे : "हम इस की पहचान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।" तो कहा जाएगा : **"येही है वोह दुन्या जिसे ह़ासिल करने के लिये तुम एक दूसरे का ख़ून बहाते थे, इस को पाने के लिये क़त्ए़ रह़मी (या'नी रिश्तेदारी तोड़ दिया) करते थे, इस की ख़ात़िर एक दूसरे पर ग़ुरूर और ह़सद करते थे और इसी के लिये एक दूसरे से बुग़्ज़ रखते थे।"**

फिर दुन्या को बूढ़ी औ़रत के रूप में जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो वोह कहेगी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे चाहने वाले, मेरे पीछे आने वाले कहां गए ? तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "इस के पीछे भागने वालों और चाहने वालों को भी इस के पास (जहन्नम में) पहुंचा दो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "क्या मैं तुम्हें इन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिस्ल मख़्लूक़ ने नहीं सुनी, (1) एक दिन वोह है जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुज़्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़गी का पैग़ाम। और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में। (और दो रातों में से) (1) एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और उस से पहले उस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी

होगी। और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह को क़ियामत का दिन होगा और फिर उस के बा'द कोई रात नहीं आएगी।''

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ और दुन्या की मज़म्मत :

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिस शख़्स को दुन्या में से कुछ ह़िस्सा दिया जाता है तो कहा जाता है : ''येह ले लो और इस से दुगनी ह़िर्स, दुगनी मश्गूलिय्यत और दुगना ग़म भी ले लो।'' और जिस को दुन्या में कोई ने'मत दी जाती है तो उस की आख़िरत से इतना ह़िस्सा कम कर दिया जाता है।'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या से जो भी लो सोच समझ लो, चाहो तो कम करो और चाहो तो ज़ियादा लो।''

सब से बड़ा ज़ाहिद और सख़ी

कहा गया है कि ''लोगों में सब से बड़ा ज़ाहिद (दुन्या से कनारा कशी करने वाला) वोह है जिस की कमाई पाकीज़ा और ह़लाल है अगर्चे वोह दुन्या पर ह़रीस ही क्यूं न हो।

और लोगों में सब से बड़ा दुन्या का त़लबगार और उस में रग़बत रखने वाला वोह है जो इस बात की परवाह न करे कि जो कमाया है वोह ह़लाल है या ह़राम। फिर अगर्चे वोह दुन्या से ए'राज़ करने वाला ही क्यूं न हो।

और लोगों में सब से बड़ा सख़ी वोह है जो हुक़ूक़ुल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उ़म्दा त़रीक़े पर अदा करे अगर्चे इस के इ़लावा दीगर कामों में लोग उसे बख़ील ही कहते हों।

और सब से बड़ा बख़ील वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ की अदाएगी में बुख़्ल करे अगर्चे दूसरे कामों में लोग उसे सख़ी ही कहते हों।''

सोना और मिट्टी का ठीकरा :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर दुन्या फ़ना हो जाने वाले सोने की बनी हुई होती और आख़िरत बाक़ी रहने वाले मिट्टी के ठीकरे से तो फिर भी हम पर लाज़िम होता कि हम बाक़ी रहने वाले ठीकरे को ख़त्म हो जाने वाले सोने पर तरजीह़ दें (तो ऐ लोगो !) फिर हम ने क्यूं कर बाक़ी रहने वाले सोने (या'नी आख़िरत) के मुक़ाबले में फ़ना होने वाले मिट्टी के ठीकरे (या'नी दुन्या) को इख़्तियार कर रखा है ?''

ह़कीम लुक़्मान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की नसीह़तें :

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَنَّان ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे बेटे ! यक़ीनन दुन्या एक गहरा समुन्दर है और उस में बहुत सारे लोग ग़रक़ हो चुके हैं पस इस गहरे समुन्दर में नजात के लिये तेरा सफ़ीना, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ होना चाहिये।

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने येह नसीह़त भी फ़रमाई : ''ऐ मेरे बेटे ! दुन्या को आख़िरत के इ़वज़ बेच डाल, दोनों से नफ़्अ़ पाएगा और आख़िरत को दुन्या के बदले मत बेच, वरना दोनों जहां में ख़सारा पाएगा।''

इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का वा'ज़ व नसीह़त :

इमाम शाफ़ेई علیہ رحمتہ اللہ الکافی ने वा'ज़ व नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! बेशक दुन्या फिसलने की जगह और

ज़िल्लत का घर है,..... इस को आबाद करने वाले ख़राबी की त़रफ़ बढ़ रहे हैं,..... इस में रहने वाले क़ब्रों की त़रफ़ जाने वाले हैं,.... इश का शीराज़ा बिखरने पर मौक़ूफ़ है,..... इस की मालदारी, ग़ुर्बत में बदल जाती है,.... उस का दौलतमन्द तंगदस्त हो जाता है और तंगदस्त दौलतमन्द बन जाता है अल्लाह से डरो और इस के अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ पर राज़ी रहो,.... बाक़ी रहने वाले घर (जन्नत) से फ़ना होने वाले घर (दुन्या) के लिये पेशगी वुसूल न कर,.... तेरी ज़िन्दगी ज़ाइल हो जाने वाले साए और गिरने वाली दीवार की त़रह़ है,.... पस अच्छे अ़मल ज़ियादा करो और उम्मीदें कम रखो।''

दुन्या की छ़ चीज़ें और उन की ह़क़ीक़त :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दुन्या छे चीज़ों पर मुश्तमिल है (1) ग़िज़ा (2) मश्रूब (3) लिबास (4) सुवारी (5) निकाह़ और (6) ख़ुश्बू। (1).... सब से आ'ला ग़िज़ा शहद है और वोह मख्खियों का लुआ़ब है। (2).... सब से आ'ला मशरूब पानी और उस में नेक, बद, इन्सान और ह़ैवान सब बराबर हैं। (3) सब से आ'ला लिबास रेशम है और वोह कीड़े से बनाया जाता है। (4)..... सब से आ'ला सुवारी घौड़ा है और उस पर मर्दों को क़त्ल किया जाता है। (5).... निकाह़ में सब से आ'ला ने'मत औ़रत से सोह़बत करना है और वोह शर्मगाह का शर्मगाह में जाना है। औरत अपने बदन में अच्छे आ'ज़ा को संवारती है, लेकिन उस से इरादा सब से बुरी चीज़ का किया जाता है और (6)..... सब से आ'ला ख़ुश्बू मुश्क है और वोह हिरन का ख़ून है।''

दुन्या की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के चन्द अश्आर :

हज़रते इमाम शाफ़ेई علیہ رحمتہ اللہ الکافی ने दुन्या की मज़म्मत बयान करते हुए फ़रमाया :

وَمَنْ يَذُقِ الدُّنْيَا فَإِنِّي طَعِمْتُهَا وَسِيقَ لِيْ عَذْبُهَا وَعَذَابُهَا

فَلَمْ أَرَهَا إِلَّا غُرُورًا وَبَاطِلًا كَمَا لَاحَ مِنْ أُفُقِ الْفَلَاةِ سَرَابُهَا

وَمَا هِيَ إِلَّا جِيفَةٌ مُسْتَحِيلَةٌ عَلَيْهَا كِلَابٌ هَمُّهُنَّ اِجْتِذَابُهَا

فَإِنْ تَجْتَنِبْهَا عِشْتَ سِلْمًا لِأَهْلِهَا وَإِنْ تَجْتَذِبْهَا نَاهَشَتْكَ كِلَابُهَا

तर्जमा : (1)..... और कौन है जो दुन्या को चखे पस मैं ने उसे चखा तो उस की मिठास और उस की तक्लीफ़ें मेरी त़रफ़ बढ़ा दी गई।

(2)...... मैं ने इसे मुतकब्बिर और ना ह़क़ पाया जैसे रेत के टीले पर उस का सराब चमकता है।

(3)...... येह दुन्या एक सड़े हुए मुर्दार की त़रह़ है जिस पर कुत्तों को छोड़ दिया जाता है जिन का काम नोचना और फाड़ खाना है।

(4)..... अगर तू इस दुन्या से बच कर रहे तो दुन्या वालों को अम्न देने वाली ज़िन्दगी गुज़ारेगा और अगर इसे लेने की कोशिश करेगा तो इस के कुत्ते तुझे नोच डालेंगे।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

मआख़ज़ो मराजेअ़

नम्बर शुमार	किताब	मुसन्निफ़/मुअल्लिफ़	मत्बूआ़
1	कुरआन मजीद	कलामे बारी तआ़ला	ज़ियाउल कुरआन लाहौर
2	कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल कुरआन	आ'ला ह़ज़रत इमामे अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	ज़ियाउल कुरआन लाहौर
3	सह़ीहुल बुख़ारी	इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी मुतवफ़्फ़ा 256 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
4	सह़ीह़ मुस्लिम	इमाम मुस्लिम बिन हुज्जाज बिन मुस्लिम अल कुशैरी मुतवफ़्फ़ा 289 हि.	दारे इब्ने ह़ज़्म बैरूत
5	सुननुत्तिरमिज़ी	इमाम अबू ईसा मुह़म्मद बिन ईसा अत्तिरमिज़ी मुतवफ़्फ़ा 289 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
	अल मुस्नदु लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	इमाम अह़मद बिन ह़म्बल मुतवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
7	अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम	इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह नीशापूरी मुतवफ़्फ़ा 405 हि.	दारुल मा'रिफ़ा बैरूत
8	अल मो'जमुल कबीर	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी मुतवफ़्फ़ा 360 हि.	दार एह़याउत्तुरासिल अ़रबी
9	अल मो'जमुल अवसत़	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी मुतवफ़्फ़ा 360 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
10	शुअ़बुल ईमान	इमाम अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी मुतवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
11	अत्तरग़ीब वत्तरहीब	इमाम ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम अल मुन्ज़िरी मुतवफ़्फ़ा 1185 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
12	फ़त्हुल बारी शरह़ सह़ीहुल बुख़ारी	अल ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अल अ़स्क़लानी अश्शाफ़ेई मुतवफ़्फ़ा 852 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत
13	फ़तावा र-ज़विय्या	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहौर
14	ह़दाइक़े बख़्शिश	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	मक-त-बतुल मदीना
15	मिर्आतुल मनाजीह़ शरह़ मिश्कातुल मसाबीह़	ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी मुतवफ़्फ़ा 1391 हि.	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहौर

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ से पेश कर्दा काबिले मुता-ला कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ्लुल फक़ीहिल फाहिम की अहकामिल किरतासिद्दराहिम) (कुल स-फहात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख) (अल याकू-ततुल वासिता) (कुल स-फहात : 60)

(3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल स-फहात : 74)

(4) मआशी तरक्की का राज़ (हाशिया व तशरीह तदबीरे इलाह व नजात व इस्लाह) (कुल स-फहात : 41)

(5) शरीअत व तरीकत (मकालुल उ-रफा-ई बि इ'ज़ाज़ि शर-ई व उ-लमा) (कुल स-फहात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के तरीके (तुरुकु इस्बाते हिलाल) (कुल स-फहात : 63)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फी तहलीलि मुआ-न-कतिल ईद) (कुल स-फहात : 55)

(9) राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में खर्च करने के फज़ाइल (रद्दुल कह्ति वल वबा-इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-कराअ) (कुल स-फहात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ोजैन और असातिज़ा के हुकूक (अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल स-फहात : 125)

(11) दुआ के फज़ाइल (अह्सनुल विआअ लि आदाबिदुआ मअहू ज़ैलु मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ) (कुल स-फहात : 140)

(शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब)

अज इमामे अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रज़ा खान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

(12) किफलुल फकीहिल फाहिल (कुल स-फहात : 74)

(13) तम्हीदे ईमान (कुल स-फहात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल स-फहात : 62)

(15) इका-मतुल कियामत (कुल स-फहात : 60)

(16) अल फदलुल मौहबी (कुल स-फहात : 46)

(17) अजलल ई'लाम (कुल स-फहात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क-मरिय्यह (कुल स-फहात : 93)

(19,20,21) जद्दुल मुम्तार अला रद्दिल मुहतार (अल मजल्लद अल अव्वल वस्सानी वस्सालिस) (कुल स-फहात : 570,677,713)

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

(22) ख़ौफ़े खुदा (कुल सफ़हात : 160)
(23) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
(26) इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
(27) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
(31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)
(32) फ़ैज़ाने एहयाउल उलूम (कुल सफ़हात : 325)
(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
(34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
(35) तहक़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
(36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
(38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
(51) ग़ौसे पाक رضی اللہ عنہ के हालात (कुल सफ़हात :106)
(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
(54) दा'वते इस्लामी की जेल खानाजात में खिदमात (कुल सफ़हात 24)
(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)
(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
(59) अहादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
(60) फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
(61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
(62) ग़ाफ़िल दरज़ी (कुल स-फ़हात : 36)
(63) बद नसीब दूल्हा (कुल स-फ़हात : 32)
(64) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल स-फ़हात : 55)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(65) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
(66) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
(67) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़हात : 74)
(68) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकतअल्लुम) (कुल स-फ़हात : 102)
(69) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
(70) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)
(71) आंसूओं का दरिया (बहूरुदुमूअ़) (कुल सफ़हात : 300)
(72) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (कुल सफ़हात : 847)
(73) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उयून व मुफ़र्रिहुल क़ल्बिल महज़ून) (कुल सफ़हात : 133)
(74) म-दनी आक़ा صلی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلم के रोशन फ़ैसले (कुल स-फ़हात : 103)
(75) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (अज़्ज़ुहदु व क़स्रुल अमल) (कुल स-फ़हात : 85)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(76) ता'रीफ़ाते नह्विय्यह (कुल सफ़हात : 45)
(77) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
(78) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)
(79) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
(80) निसाबुत्तजवीद (कुल सफ़हात : 79)
(81) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
(82) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव
(83) शर्हे मायअे आ़मिल (कुल स-फ़हात : 38)
(84) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई (कुल स-फ़्हात : 55)
(85) अल मुहादि-सतुल अ़-रबिय्यह (कुल स-फ़्हात : 101)
(86) शर्हे अर-बईनुन न-वविय्यह फ़िल अहादीसुस्सहीहतुन न-बविय्यह (कुल स-फ़्हात : 155)

(शो'बए तख़रीज)

(87) अ़जाइबुल कुर्आन मअ़ ग़राइबुल कुर्आन (कुल सफ़हात : 422)
(88) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
(89 ता 94) बहारे शरीअ़त (सात हिस्से, हिस्सा : 16)
(95) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
(96) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
(97) सहाबए किराम رضی اللہ عنھم का इश्क़े रसूल ﷺ (कुल सफ़हात : 274)
(98) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
(99) इल्मुल कुरआन (कुल स-फ़्हात : 244)
(100) अख़्लाकुस्सालिहीन (कुल स-फ़्हात : 78)
(101) अच्छे माहोल की ब-र-कतें (कुल स-फ़्हात : 56)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।